August 2021 E-ISSN – 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

International E-Research Journal

Peer Reviewed, Referred & Indexed Journal

Special Issue 273

Multidisciplinary Issue

Chief Editor -
Dr. Dhanraj T. Dhangar,
Assist. Prof. (Marathi)
MGV's Arts & Commerce College,
Yeola, Dist – Nashik [M.S.] INDIA

Executive Editors :
Dr. Tejesh Beldar, Nashikroad (English)
Dr. Gajanan Wankhede, Kinwat (Hindi)
Mrs. Bharati Sonawane, Bhusawal (Marathi)
Dr. Rajay Pawar, Goa (Konkani)

For Details Visit To : www.researchjourney.net

SWATIDHAN PUBLICATIONS

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION

August-2021 E-ISSN – 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

International E-Research Journal

Peer Reviewed, Referred & Indexed Journal

Special Issue 273

Chief Editor -
Dr. Dhanraj T. Dhangar,
Assist. Prof. (Marathi)
MGV's Arts & Commerce College,
Yeola, Dist – Nashik [M.S.] INDIA

Executive Editors :
Dr. Tejesh Beldar, Nashikroad (English)
Dr. Gajanan Wankhede, Kinwat (Hindi)
Mrs. Bharati Sonawane, Bhusawal (Marathi)
Dr. Rajay Pawar, Goa (Konkani)

Our Editors have reviewed papers with experts' committee, and they have checked the papers on their level best to stop furtive literature. Except it, the respective authors of the papers are responsible for originality of the papers and intensive thoughts in the papers. Nobody can republish these papers without pre-permission of the publisher.

- Chief & Executive Editor

SWATIDHAN INTERNATIONAL PUBLICATIONS
For Details Visit To : **www.researchjourney.net**

"Cover Photo (Source) : Internet

© All rights reserved with the authors & publisher

Price : Rs. 1000/-

'RESEARCH JOURNEY' International E- Research Journal
Special Issue - 273 : Multidisciplinary Issue
Peer Reviewed Journal
E-ISSN : 2348-7143
August- 2021

अमरकांत की कहानियों में नारी के विविध रूप

प्रा. शुभांगी मनोहर खुडे
हिंदी विभाग,
अॅड. बी. डी. हंबर्डे महाविद्यालय, आष्टी,
ता. आष्टी, जि. बीड ४१४२०३
ई-मेल:shubhangikhude10@gmail.com
मो. नं. 9049502216

अमरकांत हिंदी कथा साहित्य में प्रेमचंद के बाद यथार्थवादी धारा के प्रमुख कहानीकार थे। अमरकांत का जन्म १ जुलाई १९२५ ई. को आषाढ़ को बरसाती दिनों में उत्तर प्रदेश के बलिया जिले के एक छोटे से गाँव भगमलपुर (नगरा) नामक स्थान पर हुआ था। सन् १९४६ ई. में अमरकांत ने सतिश चंद्र कॉलेज से इंटरमीडिएट की पढ़ाई पुरी कर बी.ए. प्रयाग विश्वविद्यालय से किया। अमरकांत की प्रसिद्धि नई कहानी की प्रतिष्ठा के साथ ही प्रारंभ हुई थी। अमरकांत ने कहानी, उपन्यास, संस्मरण तथा बाल साहित्य पर अपनी लेखनी विशेष रूप से चलाई। अमरकांत 'नई कहानी आंदोलन' के एक प्रमुख कहानीकार है। उन्होंने अपनी कहानियों में शहरी और ग्रामीण जीवन का यथार्थ चित्रण किया है। मुख्यत: अमरकांत मध्यवर्ग के जीवन की वास्तविकता और विसंगतियों को वास्तविकता के साथ व्यक्त करनेवाले कहानीकार है। अमरकांत ने साहित्य को न तो कभी व्यवसाय बनाया और न कोरे मनोरंजन की आधार भूमि को स्वीकार किया, बल्कि साहित्य सृजन को सदैव मानवतावादी परंपरा के अनुरूप एक साधना ही माना है। कहानीकार अमरकांत ने जीवन के गंभीर चिंतन को साहित्य के यथार्थवादी परिधान में प्रस्तुत किया है। इन्होंने अपनी कहानियों में ग्राम्यांचल के निम्न–मध्यवर्गीय जन जीवन, भारतीय नारी जीवन और नारी जीवन की संवेदनशीलता को बड़ी मार्मिकता के साथ प्रस्तुत किया है। इनके प्रमुख कहानी संग्रह हैं, जिंदगी और जोंक, देश के लोग, मौत का नगर, मित्र मिलन, कुहासा, तूफान, कला प्रेमी, प्रतिनिध कहानियाँ, जाँच और बच्चे, औरत का क्रोध, एक धनी व्यक्ति का बयान, सुख और दुख का साथ, अमरकांत की कहानियाँ दो खंड आदि।

अमरकांत ने अपनी कहानियों में नारी के विविध रूपों को चित्रित किया है। उनकी स्त्रियों के प्रति सम्मानजनक दृष्टि रही है। एक ओर ग्रामीण परिवेश की निम्नवर्गीय शोषित नारी का चित्रण किया है तो दूसरी ओर पढ़ी–लिखी शिक्षित नारी को भी अपनी कहानियों में चित्रित किया है। नारी पूरे परिवार की धुरी होती है। पूरा परिवार उसी के कंधों पर चलता है। जब वह माँ होती है तो अलग ही रूप होता है। उसी तरह एक बेटी, पत्नी, बहन, दोस्त, भाभी, दादी, नानी, जेठानी, देवरानी आदि रूपों में वह अपनी जिम्मेदारियों का निर्वाह अच्छी तरह से करती है। अत: अमरकांत ने भी अपनी कहानियों में नारी के विभिन्न रूपों का चित्रण किया है, कहीं वह अच्छी बेटी बनी है तो कहीं आदर्श माँ तो कहीं प्रेमिका तो कही दोस्त आदि रूपों का चित्रण उनकी कहानियों में सूक्ष्म और यथार्थ रूप में हुआ दिखाई देता है।

'दोपहर का भोजन' नामक कहानी की नायिका सिद्धेश्वरी एक कुशल माँ और पत्नी के रूप में चित्रित हुई है। वह आर्थिक तंगी के चलते हुए अपने परिवार को बाँधे रखने की कर्मठ कोशिश करती है। वह सभी को एक–दूसरे के बारे में प्रशंसात्मक

परिचय देती है। घर में कुछ भी नहीं है पर वह इस प्रकार बरताव करती हैं कि घर धन–धान्य से भरा हुआ है। बच्चों के बारे में सोच–सोच कर उसकी आँखें भर आती है। बेटों और पति को एक–दूसरे के बारे में झूठा दिलासा देती रहती है। पिता के सामने बेटों की मिथ्या प्रशंसा करती रहती है। एक बार पति रामचंद्र ने सिद्धेश्वरी से कहा कि मोहन कहा है? बड़ी कड़ी धूप हो रही है तब सिद्धेश्वरी को स्वयं को पता नहीं था कि मोहन कहाँ गया है किंतु उसने पति को झूठ–मूठ ही कहा, ''किसी लड़के के यहाँ पढ़ने गया है, आता ही होगा। दिमाग उसका बड़ा तेज है और उसकी तबीयत चौबीसों घंटे पढ़ने में ही लगी रहती है। हमेशा उसी की बात करता रहता है।''[१] इस प्रकार बेटे के प्रति स्नेह यहाँ नजर आता है। सिद्धेश्वरी ने न केवल अपने बेटों को बल्कि अपने पति को भी परिवार की अभावग्रस्त स्थिति का बोध नहीं होने देती। दोपहर के खाने के वक्त वह कहती है, ''मालूम होता है अब बारिश नहीं होगी। मक्खियाँ बहुत हो गयी हैं। फूफाजी बीमार है, कोई समाचार नहीं आया। गंगाशरण बाबू की लड़की की शादी तय हो गई। लड़का एम.ए. पास है।''[२] इस प्रकार सिद्धेश्वरी परिवार वालों को भोजन करते वक्त ऐसी निराधार बातों से अभावग्रस्त स्थिति का बोध नहीं होने देती। अब यह बात दूसरी है कि वे सभी वास्तविक स्थिति से अच्छी तरह परिचित हैं। सिध्देश्वरी अपने बेटों तथा पति को भोजन खिलाती है और खुद जो एक रोटी और थोड़ी–सी दाल बची थी खा लेती है। यहाँ त्याग की मूर्ति सिध्देश्वरी की पारिवारिक स्थिति अभावग्रस्त है, लेकिन उसकी मानसिकता कमजोर नहीं है। उज्ज्वल भविष्य की उम्मीद उसके मन में है। वह पूरे परिवार को एक साथ बांधे रखाने और उनमें आपसी सौहार्द बनाए रखाने का प्रयास हर पल करती रहती है। इस तरह सिध्देश्वरी के द्वारा अमरकांत ने एक कुशल माँ और पत्नी का बड़ी खूबी से चित्रण किया है।

अमरकांत की कहानी 'असमर्थ हिलता हाथ' में की मीना का चित्रण प्रेमिका और त्यागमयी नारी के रूप में हुआ है। मीना एक पढ़ी–लिखी तथा सुशिक्षित लड़की है। वह अपनी पसंद के लड़के से शादी करना चाहती है। वह उच्चवर्णीय है और निम्न जाति के दिलीप से वह प्रेम करती है और दोनों शादी करना चाहते हैं। परंतु उसके घरवालों का इस विवाह के लिए विरोध है। उसकी माँ लक्ष्मी माथा ठोकते हुए कहती है, ''हे भगवान! इससे हमारी इज्जत चौराहे पर फोड़ दी। मैंने पैदा होते ही इसका गला क्यों नहीं घोट दिया? अब इसका पढ़ना–लिखना बंद। ब्राह्मण की लड़की को पढ़ने लिखने से क्या मतलब? बहुत क्रीम पाउडर लगाकर और साडी का उलटा पल्ला मारकर निकलती थी....अब निकलो तो मैं बताती हूँ।''[३] अंततः उसे अपने परिवार का निर्णय स्वीकार करना पड़ता है। मीना अपने परिवार के प्रति समर्पित स्त्री के रूप में चित्रित हुई है। अपनी माँ की खातिर, परिवार के खातिर वह कहती है कि, ''मैं वही करूँगी, जो तुम्हारी इच्छा थी।''[४] माँ लक्ष्मी मरणासन्न अवस्था में होती है। तब मीना उसकी भरपूर सेवा करती है।

अमरकांत की 'मछुआ' कहानी विधवा जीवन से संबंधित है। इसमें सीतादेवी के द्वारा विधवा नारी का चित्रण हुआ है। विधवा सीतादेवी अपनी पुत्री नीरजा के साथ मेहनत और परिश्रम से जीवनयापन कर रही है। शहर के किसी बालिका विद्यालय में पढ़ानेवाली वह साधारण सी महिला जितनी कर्मठ है उतनी ही निश्चल है। नौकरी के आलावा वह शाम–सेवेरे टयूशन, बाजारहाट रसोई–पानी सब कुछ करती है। दस वर्ष पूर्व पति की मृत्यु के बाद से अब तक घोर परिश्रम करके उन्होंने लड़की को इंटरमीडियट में पहुँचाया था। पड़ोस में रहनेवाले युवक अनिलेश के बीमार पड़ने पर वे दोनों उसकी सेवा करती

हैं। उसके ठीक होने पर अपने परिवार के सदस्य के समान उससे अपनत्व भरा व्यवहार करती है। अनिलेश के उनके घर आने–जाने से मुहल्ले के लोग उनके चरित्र पर आक्षेप भी लगाते है। यहाँ तक कि जान–पहचान वाली औरतों ने सीतादेवी के घर आना–जाना बंद कर दिया। फिर भी सीतादेवी अपना बरताव बदलती नहीं वह दूसरों को मदद करती रहती है। सितादेवी के माध्यम से कहानीकर ने विधवा–जीवन की त्रासदी को वर्णित किया है।

अमरकांत कृत 'प्रिय मेहमान' कहानी की पात्र 'नीलम' का चरित्र एक बुद्धिमति, स्वाभिमानी, साहसी व्यवहारिक और युवा लड़की के रूप में चित्रित किया गया है। नीलम पढ़ी–लिखी शिक्षित नारी है। वह नीरज के घर जाती है। उस समय नीरज की पत्नी घर पर नहीं होती। वह अपनी बुद्धिमत्ता से नीरज की दूषित मनोभावों को तुरंत पढ़ लेती है। नीरज को लगता है, यह मेरी बातों में आ गई है। वह उसे प्रलोभन भी देता है। वह कहता है, मैं सब ठीक कर दूँगा। तुम्हारे भाग्य को बदल दूँगा। मिलते जुलते रहना इस प्रकार वह नीरज को अपने जाल में फंसाने के कई पैतरे अजमाता है। उसे वह अपना हाथ दिखाने को कहता है उसे वह बहुत भाग्यशाली ऐसा भी कहता है। नीलम उसकी मंशा जानती है इसलिए कहती है, ''मैं जानती हूँ कुछ–कुछ वह व्यंग्यपूर्वक हँसी। नीरज की आँखे फैल गई। हाँ, आपके जानने और मेरे जानने में फर्क है। आप हाथ देखकर बताते हैं, मैं बिना हाथ देखे ही बता सकती हूँ। वह कटुता से बोली।''[५] वस्तुत: नीलम एक ऐसा चरित्र है जो स्वार्थी पुरूषों को पहचानने में सक्षम है, समर्थ है। वह सच्चरित्र लड़की है। अत: प्रलोभन में न पड़कर स्वार्थी नीरज को पहचान जाती है और नीरज को अपने रूप से परिचित करा देती है। वह अपने चरित्र से स्पष्ट कर देती है कि आर्थिक कठिनाइयों में जूझते हुए भी वह किसी प्रकार की हीन भावना से ग्रस्त नहीं है। वह पढ़ी–लिखी स्वाभिमानी लड़की है। वह नीरज को कहती है, भाई साहब, वह आहत कुछ सिंहनी की तरह उसको देखती हुई अत्याधिक अभिमानपूर्वक बोली ''मैं अभी इसी समय आपका हाथ देखे बिना आपके बारे में सैकडों बातें बता सकती हूँ। अच्छा अब मैं चलूँगी।''[६]

अमरकांत लिखित 'मूस' कहानी में 'मुनरी' को शोषित नारी के रूप में चित्रित किया है। वह ऐसी नारी है जो शोषण का शिकार है। मुनरी मजबूत और सीधी–साधी स्त्री है। अपने घर की आर्थिक परिस्थिति के कारण अपनी परिस्थिति से समझौता करके वह परबतियाँ के साथ आ जाती है और मूस को अपना पति मान लेती है। मुनरी आकर्षक व्यक्तित्व की धनी थी। देखने में सुंदर है। मूस देखने में बौना सीधा और बूढ़ा है। परंतु मुनरी बसंत की ताजी और शक्तिदायिनी हवा की तरह है। 'मूस' पहले से ही परबतिया के साथ शादी–शूदा है फिर भी परिस्थिति के कारण वह उसके साथ रहती है। कुछ दिनों बाद वह अपने चहेते के साथ घर बसा लेती है। परंतु मुश्किल के दिनों में जिसने साथ दिया था उस मूस को वह भूलती नहीं। तभी तो मूस के बीमार हो जाने पर भी वह उससे मुँह नहीं मोड़ती अपितु उसके लिए इलाज के पैसे देती है। वह परबतिया को कहती है, ''इस प्रकार दुख न करो जलेबिया की माई, पाँच का नोट और पोटली में चावल और मूँग की दाल है। जलेबिया के बाबू को किसी डॉक्टर से दिखाकर इलाज करवाओ।....कालीमैया अच्छा कर देगी।''[७] इस प्रकार मुनरी शोषित होकर भी करूणामयी नारी है। इसी कहानी की नारी पात्र 'परबतिया' जो मूस की पत्नी है। एक चालाक, दूरदर्शी, पति पर अधिकार जमानेवाली लोभी तथा चंचल स्त्री के रूप में चित्रित हुई है। उसने मुनरी को भी चालाकी से अपने साथ लाया था। इसके साथ ही भूतपूर्व श्रीमति की

प्रेम कथा, मैत्री, मुलाकात, तूफान, प्रेमी, केले पैसे और मूंगफली, सहधर्मिणी, जाँच और बच्चे आदि कहानियों में नारी के विभिन्न रूपों का यथार्थवादी और सूक्ष्म रूप से चित्रण हुआ है।

निष्कर्षत:

हम कह सकते हैं कि अमरकांत की कहानियों में भारतीय नारी की झलक दृष्टिगत होती है। इनकी कहानियों में अपने ग्राम्यांचल के निम्न–मध्यवर्गीय जन जीवन, भारतीय नारी जीवन और नारी जीवन की संवेदनशीलता को बड़ी मार्मिकता के साथ प्रस्तुत किया है। अमरकांत के नारी पात्र शोषित होते हुए भी धूर्त, कुटिल नहीं है वे पुरूष से अधिक व्यावहारिक साहसी और कर्मठ दिखाई देते है।अमरकांत की कहानियों प्रेमवत्सल मां और सहचारिणी सिद्धेश्वरी है। त्यागमयी, घर के इज्जत की रक्षक मीना। विधवा जीवन की त्रासदी से ग्रस्त सीतादेवी है। स्वाभिमानी, दुश्च्चारित्र–पुरुषों को पहचाननेवाली नीलम है तो शोषण का शिकार, करुणामयी मुनारी भी है। इन नारियों के अलावा अमरकांत ने चालक, दूरदर्शी, चंचल, धूर्त 'परबतिया' है । इसतरह अमरकांत कहानियों में नारी के विभिन्न रूप देखने को मिलते हैं।

संदर्भ ग्रंथ

१. अमरकांत की संपूर्ण कहानियाँ खंड १–अमरकांत, अमर कृतित्व इलाहाबाद, २००२, पृ.४९
२. वही, पृ.५२
३. अमरकांत की संपूर्ण कहानियाँ भाग दो, अमरकांत, अमर कृतित्व इलाहाबाद, २००२, पृ.६
४. वही, पृ.१०
५. वही, पृ.६३
६. वही, पृ.६३
७. अमरकांत की संपूर्ण कहानियाँ भाग एक, अमरकांत, अमर कृतित्व इलाहाबाद, २००२, पृ.१८१

मृदुला गर्ग के उपन्यासों में नारी चेतना

प्रा.शुभांगी मनोहर खुडे
हिंदी विभाग
ॲड. बी.डी.हंबर्डे महाविद्यालय, आष्टी

हिंदी कथा साहित्य में मृदुला गर्ग का महत्वपूर्ण स्थान हैं। आठवें दशक में एक सशक्त कथाकार के रूप में अपनी पहचान बनानेवाली मृदुला जी न केवल एक कथाकार है बल्कि एक समर्थ निबंधकार और नाटककार भी है। कहानियों व उपन्यासों की रचना के अलावा उन्होंने नाटक, निबंध संग्रह, संस्मरण आदि लिखकर अपनी बहुमुखी प्रतिभा का परिचय दिया है। साथ ही इन्होंने अपनी साहित्यिक उर्जा और निरंतरता को बनाए रखा है। परंतु मृदुला की कोई काव्यकृति और आत्मकथात्मक कृति अभी तक प्रकाश में नहीं आई है। मृदुला गर्ग ने अपने जीवन में कई उतारा–चढ़ाव देखे हैं। लेखिका के रूप में अपने–आप को स्थापित करने के लिए उन्होंने काफी संघर्ष किया। स्त्री लेखिका होने की वजह से जिंदगी ने उनका बहुत इम्तेहान लिया है और इन परीक्षाओं में उनके परिवार और परिवेश का प्रभाव रहा है। मृदुला के साहित्य में प्रेम–विवाह, सेक्स, प्रेम, उपभोक्ता विचारवाद, पुरूष की वर्चस्व वृत्ति का खंडन, विवाहिता की मानसिकता आदि बातें अभिनव संवेदन के रूप में परिलक्षित होती है। मृदुला गर्ग के उपन्यासों को कथानक की विविधता और नयेपन के कारण आलोचकों ने बहुत सराहना की है। उनके आठ उपन्यास हैं, उसके हिस्से की धूप (1975) वंशज (1976), चित्तकोबरा (1979), अनित्य (1980), मैं और मैं (1984), कठगुलाब (1996) मिलजुल मन (2009) और वसु का कुटुम।

'नारी चेतना' का अर्थ है नारी में निहित जागरूक शक्ति। नारी, समाज तथा परिवार का एक अभिन्न अंग है। जब तक नारी अपने अधिकारों तथा कर्तव्यों के प्रति सचेत नहीं होगी तब तक न परिवार ठीक से चल सकता है और न ही समाज। प्राचीन काल से आज तक नारी में चेतना का निरंतर विकास होता रहा है। मृदुला के अनुसार नारी चेतना का अर्थ है, स्त्री–पुरूष के अंतः संबंधों को नकारे बिना पारंपरिक संबंध से मुक्ति। अतः जो दृष्टि नारी की सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और सामाजिक छवि के तिलिस्म को तोडे वह नारी चेतना है।

उनके मतानुसार फेमिनिज्म का सही अनुवाद नारी चेतना है। वह नारी की चेतना नहीं नारी–संबंधी चेतना है। मृदुला जी मानती हैं कि "जिस वर्ग के पास सत्ता आ जाती है, वह अपने से कमतर व्यक्ति का शोषण करता है। नारी मुक्ति के विषय में वे कहती हैं कि स्त्री की मुक्ति या प्रगति तभी सार्थक हो सकती है, जब उसकी लड़ाई पुरूष से न होकर दोषपूर्ण व्यवस्था, रूढ़ धार्मिक मान्यता, दोहरी मूल्य पद्धति आदि से हो।"[1]

मृदुला जी अपने लगभग सभी उपन्यासों में स्त्री की महत्ता की पक्षधर रही है। क्योंकि वर्तमान में भी नारी अपनी इच्छा से कार्य नहीं कर सकती। उसे पुरूष से अब भी कम आँका जाता है। अब भी स्त्री अपना जीवन साथी नहीं चुन सकती। इसलिए मृदुला जी चाहती है कि उनकी स्त्री चाहे नौकरी पेशा हो या घरेलू अशिक्षित हो या अनपढ़ पर हो वह स्वावलंबी। उसे अपने अस्तित्व के प्रति सचेत रहना होगा। 'चितकोबरा' उपन्यास मृदुला जी का बहुत चर्चित उपन्यास है। इसमें शादीशुदा औरत की कथा कही गई है। इस उपन्यास में खुले शब्दों में औरत की सेक्स से संबंधी इच्छाएँ बताई गई लेकिन समाज ने इसका बहुत विरोध किया। इस उपन्यास को लोगों ने अश्लील कहा। पर इन सब बातों का उन पर कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ा। उनका लक्ष्य था कि स्त्री, स्वयं अपना अस्तित्व खोजने के काबिल बने। लोगों ने सोचा शायद अब मृदुला अश्लीलता पर नहीं लिखेगी परंतु उन्होंने अपना काम जारी रखा। वे अपने लेखन के द्वारा समाज की यथार्थ तस्वीर दुनिया को दिखाना चाहती थी। इस प्रकार उनके उपन्यास 'कठगुलाब' में भी उन्होंने वर्तमान स्त्री के संघर्ष और उनकी इच्छाओं को अभिव्यक्ति दी है। यह उपन्यास पुरूष के द्वारा किए जा रहे शोषण, दमन, बलात्कार का यथार्थ है। यह उपन्यास एक तरह से भारतीय स्त्रियों की पीड़ा एवं संघर्ष का एक जीवंत दस्तावेज है। इस सशक्त औपन्यासिक कृति में नारी पर घटित अन्याय, अत्याचार एवं उसकी वेदना के साथ नर–नारी संबंधों की जटिल बुनावट और उसके रेशे–रेशे को व्याख्यायित करने की छटपटाहट का प्रत्यक्ष प्रमाण मिलता है। 'कठगुलाब' का प्रतीकात्मक अर्थ है 'नारी की जिजीविषा' इस उपन्यास में मृदुला गर्ग ने रेखांकित किया है कि स्त्रियाँ गुलाब नहीं हैं, जो उग जाने पर अपने आप खिल भी जाता है। वे कठगुलाब हैं, जिन्हें थोड़ी–सी देखभाल के साथ खिलाना पड़ता है। मृदुला गर्ग ने स्त्रियों को बलात्कार होने पर अपराध बोध से मुक्त रहने की प्रेरणा दी है। उसे प्रतिकूल परिस्थितियों में संघर्ष करते रहना चाहिए। वर्तमान समाज में बलात्कार जैसा घिनौना कार्य करने के लिए पुरुष तत्पर हो जाता

है। परंतु लेखिका ने अपने उपन्यास 'कठगुलाब' की पात्र स्मिता जो बलात्कार की शिकार हुई उसके माध्यम से अपने भाव बतलाए है, "सूरजमुखी अंधेरे के की नायिका की तरह मैं खुद को दूषित पानी क्यों नहीं मानती? खुदकुशी करने का मेरा जमीन मुझे नहीं उकसाता? मेरा मन मुझे धिक्कारता था तो सिर्फ इसलिए कि मैंने प्रतिशोध नहीं लिया। भगौडे की तरह पलायन क्यों किया? क्या एक बेहतर जिंदगी जीने का ख्याल देखना बुजदिली है।"[2]

मृदुला गर्ग का सोचना है कि स्त्री–पुरूष संबंध को स्वतंत्र और स्वच्छंद होना चाहिए। इस स्वच्छंदता के लिए वे विवाह की मर्यादा को भी नहीं मानती। उनके लिए स्वतंत्रता व्यक्ति के लिए किसी भी मर्यादित संबंध से ज्यादा महत्व रखती है। 'उसके हिस्से की धूप' में लेखिका ने विवाह की प्राचीन पद्धति का बंधन मानते हुए मनीषा के द्वारा इसके परिवर्तित रूप को स्वीकार किया है। मनीषा को विवाह की पुरानी रस्मों में बिलकुल भी विश्वास नहीं है। जितेन से उदासीन होकर वह उससे तलाक ले लेती है। मनीषा विवाह के इस रूढ़िवादी सोच से विद्रोह करती है। उसके अनुसार यह जरूरी नहीं कि विवाह के पश्चात पति–पत्नी जो भी करें एक साथ करें। दोस्त भी बनाये तो एक। वह कहती है, "यह वैवाहिक जीवन भी अजीब चीज है....जो करो एक साथ। साथ बैठो, साथ बोलो, चाहे बोलने को कुछ हो, चाहे नहीं, साथ घूमों, साथ दोस्त बनाओं, चाहे एक का दोस्त दूसरे को कितना ही नामुराद क्यों न लगे, साथ खाओ और साथ सोओ चाहे एक के खराटे दूसरे को सारी रात जगाए क्यों न रखें।"[3] 'चित्तकोबरा' उपन्यास में भी परंपरागत भारतीय विवाह संस्था पर प्रश्नचिह्न लगाया है। जहाँ पति–पत्नी परस्पर साथ रहते हुए यंत्रवत् बर्ताव करते हैं, किंतु भारतीय विवाह संस्था में पति–पत्नी के संबंध का आधार केवल यौन संबंध नहीं है, बल्कि परस्पर प्रेम, विश्वास और सबसे अधिक प्रतिबद्धता हैं चित्तकोबरा में मृदुला जी ने भले ही 'मनु' की पीड़ा को अभिव्यक्ति दी है किंतु इसका पुरूष पात्र महेश परंपरागत रूपों से अलग है। वह एक स्थान पर मनु से कहता है, "विवाह के बंधन में मेरा विश्वास नहीं है मनु।"[4] मनु की अस्मिता की खोज विवाह को बरकरार रखते हुए भी उसकी मर्यादा को लाँघ जाती है। उसे रिचर्ड के सान्निध्य में सुख मिलता है, तो दूसरी ओर अपने पति के साथ रत होने पर वह पीड़ा का अनुभव करती है।

नारी का घर से बाहर आकर काम करने का उद्देश्य था कि वह आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर हो सके। शोषण से मुक्ति पा सके। किंतु परवर्तित समाज तथा अर्थव्यवस्था में

केवल एक व्यक्ति द्वारा काम करना संभव नहीं। इस प्रकार आज के युग की जीवनशैली ने नारी को अनिवार्य रूप से कामकाजी बना दिया। 'वंशज' उपन्यास की 'सविता' आर्थिक रूप से कामकाजी तो नहीं है परंतु जीवन में 'अर्थ' को आवश्यकता से अधिक महत्व देती है। वह भौतिक संपत्ति को सर्वोपरि मानती है। जज साहब की आज्ञाकारिणी बहू बनने के पीछे की मानसिकता इससे द्रष्टव्य होती है, "जैसे ही उसकी समझ में आ गया कि उस संभ्रात घर के ऐश्वर्यमयी स्वामिनी बनने के लिए उसे सुधीर के नहीं, जज साहब के कंधे थमाने होंगे, वह 'पिया मिलन' की व्यग्र रोमानी वधू से कर्तव्य निष्ठा से ओत–प्रोत कुलवधू बन गई।"[5] इससे स्पष्ट होता है कि 'सविता' का चरित्र आज की उपभोक्तावादी संस्कृति के अर्थलोलुप व्यक्ति का प्रतिनिधित्व करता है।

भारतीय संस्कृति में स्त्री और पुरूष गृहस्थी रूपी धुरी के पहिए हैं। एक पहिये को क्षति पहुँचने पर गाड़ी का रूकना लाजमी है। परंतु व्यवहार में नारी की स्थिति दोयम दर्जे की रही। आज स्वतंत्रता से आगे बढ़कर वह निरंकुश की सीमा तक पहुँच गई है वह हताश होकर कहती है कि उसने यह क्षण तो नहीं माँगा था। 'उसके हिस्से की धूप' मुक्ति की आधुनिक अवधारणा को घेरे, स्त्री के मानसिक अस्वातंर्त्य से अस्मिता के तल को खोजता और नया आकार देता उपन्यास है। इस उपन्यास की नायिका 'मनिषा' आधुनिक अकेलेपन की त्रासदी से त्रस्त है। व्यस्त जीवन के गहराते अंधेरे में 'जितेन' पुनम रात का चाँद है। मनीषा एक स्वस्थ खुले आसमान की जिंदगी चाहनेवालों में से है। कार के बंद दरवाजे से स्कूटर की खुली साँस उसे अधिक रास आती है। उनके बीच बढ़ते संबंध के बारे में जितेन के मद्रास जाने से पूर्व उसे आगाह करती है। परंतु 'जितेन' मात्र इतना कहकर चला जाता है कि प्रेम की परिणति विवाह नहीं। प्रेम चुक जाने पर खास नहीं रहता। वह 'मनीषा' से कहता है, नहीं मनीषा ऐसा नहीं होता। प्रेम क्षणिक वस्तु है। जब चुक जाता है तो विवाहित जीवन ऐसा ही होता है। लेखिका होने के लेखन ही में मनीषा अपनी पूर्णता खोजती है। इसका पता उसे तब चलता है जब उसकी मुलाकात जितेन से दोबारा होती है। चार साल बाद जब जितेन को मनीषा देखती है तो उसे ऐसा लगता है जैसे उसे उसके सूखे जीवन में एक दिशा मिल गई हो और यह दिशा उसे जरूर मंजिल तक पहुँचाएगी। परंतु लक्ष्य उसने जितेन को माना था परंतु यथार्थ यह था कि जितेन के जरिए मनिषा ने अपने लेखन

की सच्चाई को पहचाना। इस प्रकार प्रेमभंग में न टूटते हुए मनीषा को अपने अधिकारों का आभास कराकर मृदुला जी ने नारी पात्रों द्वारा सृजनात्मक पक्ष पर प्रकाश डाला है।

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि भारतीय समाज पुरूषसत्तात्मक समाज रहा है। स्त्री को घर की चहारदीवारी में कैद रखा जाता था। आज स्त्री कुछ हद तक की स्वतंत्र हुई है। स्त्री की स्वतंत्रता का अर्थ यह कतई नहीं है कि वह अपनी संस्कृति और सभ्यता से छूट जाएँ और अश्लीलता पर उतर आए। स्त्री की माँग मात्र इतनी हो कि दायरे में रहकर वह भी अपनी स्वतंत्रता को आप जिए। उसे पुरूष का मोहताज न बनना पड़े बल्कि साथी बनें। पुरूष से आगे निकलने की होड़ को स्त्री स्वतंत्रता नहीं कहा जा सकता। यदि स्त्री स्वतंत्रता चाहती है तो उसे पहले स्वतंत्रता के मायने को समझना होगा। तभी मानवीयता के सही अर्थ की स्थापना स्त्री स्वतंत्र्य से जुड़ पाएगी। मृदुला गर्ग को यकीन है कि विश्व स्तर पर स्त्री अपने अस्तित्व के संघर्ष में अवश्य विजयी होगी। साहित्यकार के नाते उनका प्रतिभाग जारी है।

संदर्भ ग्रंथ

1. औरत होने की सजा : अरविंद जैन, पृ. 27

2. कठगुलाब : मृदुला गर्ग, पृ. 32

3. उसके हिस्से की धूप, मृदुला गर्ग, पृ. 18

4. चित्तकोबरा : मृदुला गर्ग, पृ.102

5. वंशज : मृदुला गर्ग, पृ.116

◆◆◆

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

Multidisciplinary International E-Research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

January-2020 Special Issue – 212 (B)

Women Empowerment

Through Entrepreneurship & Skill Development

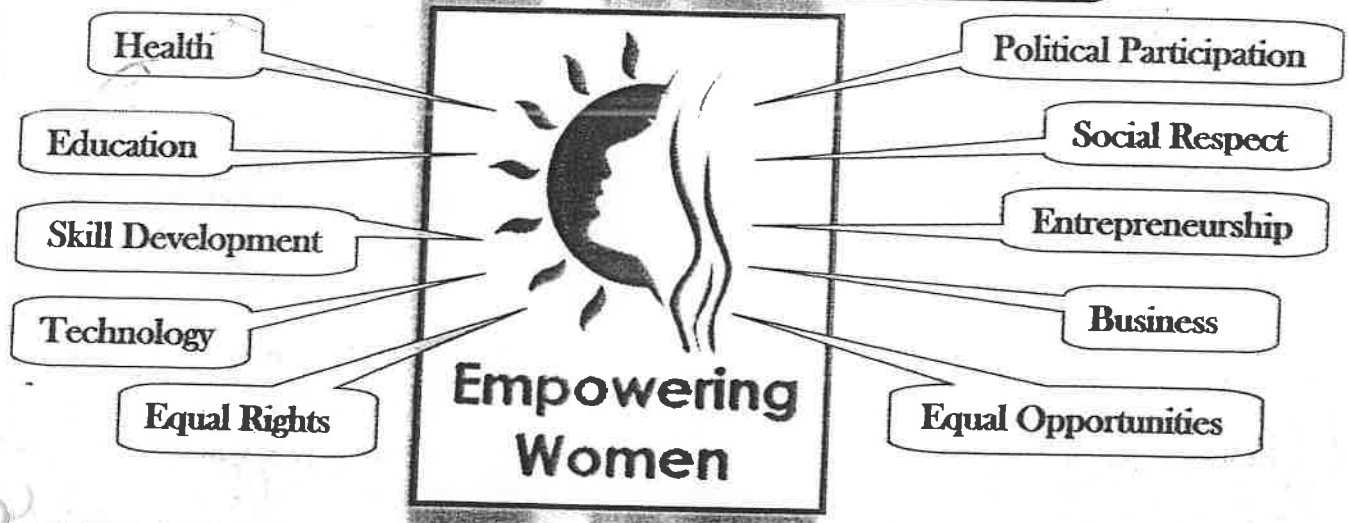

Guest Editor :
Dr. Sopan Nimbore
Principal,
Arts, Commerce & Science College,
Ashti, Dist.- Beed [M.S.] India

Executive Editor:
Prof. Shubhangi Khude
Coordinator, Vishakha Sammitee,
Arts, Commerce & Science College,
Ashti, Dist.- Beed [M.S.] India

Chief Editor-
Dr. Dhanraj T. Dhangar (Yeola)

This Journal is indexed in :
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmoc Impact Factor (CIF)
- Global Impact Factor (GIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)

For Details Visit To : www.researchjourney.net

SWATIDHAN PUBLICATIONS

31	Women Empowerment through Skills Development	Niwrutti Nanwate & Prof. B.K.Bangar	123
32	Analysis of Women Participation in Indian Agriculture	Dr. Mangal Tekade	126
33	Challenges for Social Entrepreneurship	Prof. Amar Shaikh	130
34	Government Scheme for Women Skill Development	Mr. Sandip Aute	133
35	Women Empowerment : Need of the Time	Dr. Bharat Gugane & Dr. Subhash Savant	134
36	A Study of Women Empowerment in India	Dr. Pramod Nile	141
37	Financial Inclusion and Women Empowerment : A Key for Economic Development	Mr. Anchit Jhamb & Ms. Swati Aggarwal	143
38	Deserted Women Empowerment : A Need of Society	Dr. Gajanan Mudholkar	147
39	Challenges and Opportunities in Skill Devlopment Program for Women – With Special Reference of Sports	Dr. Prashant Meher	150
40	Adoption of Farm Women Regarding Health and Nutritional Practices	S. P. Dhoke Y. B. Shambharkar & D. D. Aglawe	152
41	आजकी कामकाजी महिलाएँ और उनकी समस्याएँ	डॉ. मदिना शेख	153
42	महिला सक्षमीकरण की आवश्यकता	डॉ. गुलाबराव मंडलिक	157
43	साहित्य और समाज में महिला सशक्तीकरण विमर्श	प्रा. जयनुल्लाखान पठाण	160
44	कामकाजी नारी की समस्याएँ	प्रा. शुभांगी खुडे	164
45	महिला सशक्तीकरण और उनके अधिकार	डॉ. सखाराम वांढरे	167
46	कामकाजी महिलाओं की समस्या	प्रा. सुनिता बोंबे	170
47	महिला सशक्तीकरण और उनके लाभ	डॉ. राजाराम सोनटक्के	172
48	महिला सशक्तीकरण और महिला विकास	प्रा.रमेश भारूडकर	174
49	भारतीय कृषी उद्योग में महिला का योगदान तथा उसकी स्थिती	प्रा. ओमप्रकाश झंवर	178
50	महिला सशक्तीकरण : समाज की वास्तविकता और जरुरत	प्रा. सय्यद अफरोज	180
51	महिला सशक्तीकरण में स्वयंसहायता समूह की भूमिका	डॉ. संजय कांबळे	184
52	महिला सशक्तीकरण का इतिहास	एस. ई. भोसले	187
53	नारी सशक्तीकरण की रुकावटे और भारत सरकार की योजनाएँ	प्रा. श्रीमती एच. टी. पोटकुले	190
54	स्वयं सहायता समूहोंद्वारा महिलाओं का सशक्तीकरण : एक अध्ययन	डॉ. प्रमिला भगत	193
55	स्वयं सहायता समूह और महिला सशक्तीकरण	डॉ. राजेश गायधनी	198
56	महिला सशक्तीकरण	प्रा. पोपट जाधव	203
57	महिला सशक्तीकरण के लिए भारत की भूमिका	डॉ. व्ही. बी. गव्हाणे	207
58	कन्या की भ्रूणहत्या की पार्श्वभूमी और परिणाम	डॉ. एस. एस. कांबळे	210
59	कामकाजी स्त्रीयों की समस्या	डॉ. किशोर चौधरी	214

Our Editors have reviewed papers with experts' committee, and they have checked the papers on their level best to stop furtive literature. Except it, the respective authors of the papers are responsible for originality of the papers and intensive thoughts in the papers. Nobody can republish these papers without pre-permission of the publisher.

- Chief & Executive Editor

Published by

RESEARCH JOURNEY International Multidisciplinary E-Research Journal
Impact Factor - (SJIF) - 6.625 (2019) | ISSN : 2348-7143
Special Issue : 212 (B) | January 2019
Women Empowerment

कामकाजी नारी की समस्याएँ

प्रा. शुभांगी मनोहर खुडे
कला, वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय आष्टी
shubhangikhude10@gmail.com
भ्रमनध्वनी क्र. ९०४९५०२२१६

आर्थिक कारणों से स्त्रियॉ पुरूषों के बराबरी में व्यावसायिक क्षेत्र में आ गई है। परिणामत: स्त्रियों में नए विचार, नया ज्ञान, बाहरी दुनिया से संपर्क बढ रहे हैं। घर की चार दिवारी में कैद, पर्दे और बुर्के में फॅसी नारी ने अब खुली हवा में मुक्ति की सॉस ली। कुछ व्यवसाय पहले सिर्फ पुरूषों के लिए आरक्षित थे, पुरूष ही सही जिम्मेदारी निभा सकता है इस भ्रम को स्त्रियों ने तोडा। लेकिन एक बात ऐसी है कि, कुछ व्यवसाय ऐसे है जो सिर्फ स्त्रियों के लिए ही आरक्षित हो गए जैसे – नर्स, रिसेप्शनिस्ट, एयर होस्टेस आदि नौकरी, व्यवसाय में प्रवेश करने के कारण आर्थिक सत्ता स्त्री को भी प्राप्त हो गई है। वह पुरूष के तुल्य बन गई है दुर्बल नहीं रही है। दफ्तरों में रिसेप्शनिस्ट लिपस्टिकी मुस्कान से वेलकम करती है, जो आगंतुक पर नशा सा असर करता है।

दवाखाने में मरीज मात्र दवा से अच्छे नहीं होते। नर्स की मुस्कान भरी गुडमॉर्निंग कानों में मिश्री घोल देती है और मरीज अच्छे हो जाते है। दफ्तरों से भी अधिक महत्वपुर्ण स्थान अस्पतालों में नर्स का है। ''हॉस्पिटल में नर्स जब गुडमॉर्निंग करती है, तो मरीज की तबीयत फिफ्टी परसेंट स्वत: अच्छी हो जाती है, दवाई के साथ अंग्रेजी का नन्हा सा डोज काफी सुकून दिलाता है।'' इस कारण नौकरी का विज्ञापन भी कुछ यो निकलता है, फ्लुएँटली इंग्लिश स्पीकिंग, स्मार्ट, सेल्सगर्ल वान्टेड' सुंदर और मीठा हो तो क्या कहेंगे यह तो चॉदी का वर्क लगी बरफीसा होगा। कामकाजी महिलाओं की समस्याओं का चित्रण प्राय: सभी महिलाकारों एवं उपन्यासकारों ने किया है। शिक्षिता युवतियॉ अपनी कौमार्यावस्था में तथा वैवाहिक जीवन में अलग – अलगविभागों एवं क्षेत्रों में कार्यरत है। इन युवतियों को समाज में असंख्य संकटों एवं शोषण – प्रक्रियाओं में से गुजरने के लिए विवश होना पडता है। जाने क्यों आज भी हमारे समाज में शिक्षित एवं कामकाजी महिलाओं – विशेषत: युवतियों के प्रति कोई स्वस्थ दृष्टीकोण नहीं रखा जाता। आज भी हममें से बहुत ऐसे हैं जो कामकाजी युवती को जन सुलभ करार देने से बाज नही आते। कुछ विभाग तो इस दृष्टि से इतने बदनाम हैं कि उनमें कार्यरत प्रत्येक युवती को कालगर्ल समझ लिया जाता है। पुरूष कभी – कभी नौकरी देने या दिलाने के बहाने, कभी तरक्की दिलवाने के लोभ में फंसाकर युवतियों को भोगना चाहते हैं तो कभी किसी न किसी षडयंत्र का शिकार बनाकर उसके शरीर से खेलना चाहते हैं। ऐसी स्थिती में अपनी सहजात कोमलता के कारण कुछ तो समर्पण के लिए विवश हो रही हैं जब की अन्य डटकर विरोध करती हुई नारी – मुक्ति का ध्वज उठाए हुए संघर्ष का रास्ता अपना रही हैं। उधर इन कामकाजी महिलाओं को घर तथा बाहर में तालमेल बैठाने में भी दिक्कत अनुभव हो रही है। समाज इन स्त्रियों की विवशता नही समझता।

कामकाजी महिलाओं के चित्रण में प्राय: शोषण, अपमान, उत्पीडन आदि को ही दिखाया गया है। वास्तव में परंपरित समाज की कुंठा यह है कि वह नारी -- स्वावलंबन को कतई पसंद नहीं करता। इससे [illegible]

उत्पीडन शोषण अन्याय रूढियां कुरीतियों आदि के विरूध्द चलने वाले राजनीतिक, सामाजिक व आर्थिक आंदोलनों ने अन्य पीडित – शापित वर्गों के साथ – साथ नारी को भी मोर्चे पर लाकर खडा कर दिया है।

कामकाजी नारियों में कई श्रेणीयाँ है -- जैसे कुमारिकाएँ, विधवाएँ, गृहिणियाँ, परित्यकाएँ। कुमारिका वे है जिनका विवाह नहीं हूआ है और नौकरी कर रही है। जैसे समानांतर कहानी की शोभना, इत्यादी कहानी की प्रीति आदि।

विधवाओं के लिए आजीविका अनिवार्य हो जाती है। यहाँ कई विधवाएं कामकाजी जीवन जी रही है। जैसे -- सींढिया की मनीषी, अगरबत्ती, की भूपी, मामी आदि।

गृहिणियां भी आज – कल नौकरी को वरीयता देणे लगी हैं ताकि आर्थिक स्वावलंबन प्राप्त किया जा सके। जैसे 'परछाइयों के पीछे' की सुमित्रा, 'ककरेखा की तनु' उम्र एक गलीयारें की सुनंदा आदि।

गृहिणियों में भी कुछ ऐसी हैं जिनकी गृहस्ती सामान्य रूप से चल रही है। जैसे कुछ नौकरीशुदा गृहिणियाँ, उत्पीडन व संत्रास को भोग रही हैं। जैसे 'गंध की सुम्मि,' 'नावे में अपने अतित के कारण संत्रस्त' मालती आदि।

परित्यक्ताओं को भी विधवाओं की तरह सामाजिक दायित्वों के निर्वाह व जीवन – यापन के लिए नौकरी करनी पडती है जैसे 'दो कहानियों' के बीच की श्री।

कामकाजी पत्नी आर्थिक दृष्टी से भले ही स्वतंत्र हो तो भी असलियत में वह स्वतंत्र नहीं होती। पति उसके वेतन पर अपना पूर्ण अधिकार समझता है। बहुत सीमित मर्यादा में वह उसे आर्थिक स्वतंत्रता देता है। अपने रक्त संबंधों के लिए वह चाहे जितना खर्च करता है, परंतु पत्नी अपने मैकेवालोंपर कुछ खर्च करे तो उसे गुस्सा आता है। पुरूष की इस मानसिकता और स्त्री की उस पर की गयी प्रतिक्रिया को डॉ. पद्मशा ने छोटे शहर की शंकुतला को स्वीकारा है। अपने मैकेवालो पर थोडा सा खर्च करने से पति में जो बदलाव पत्नी देखती है इससे भीतर ही भीतर वह छटपटा जाती है। ऐसे ही अन्य प्रसंगों से उबकर वह एक दिन पति से अलग हो जाती है। अलग होने के कुछ ही दिनोंबाद उसे अपनी गलती का एहसास हो जाता है। उसे एक आशा थी कि पति के नोटिस से वह और बिखर जाती है। किसी और से जुडकर वह जीना चाहती है। कामकाजी पत्नी की आय पर पूर्ण नियंत्रण रखने की पति की कोशिश और पत्नी की घूटन यहाँ व्यक्त हुई है।

वैदिक युग की स्त्री, जो समाज में, परिवार में एक सम्माननीय स्थिति को प्राप्त कर पुरूष की तरह ही अपने को बराबरी का हकदार समझती थी, कुछ दिन पूर्व तक अपनी तमाम विवशताओं में पशुवत् नारकीय जीवन की यंत्रणा पाती रही है चहार दिवारी की घूटन में संसार के खुलेपन की ताजी हवा को सिर्फ महसूसती रही। उसे देखने का साहस नही बटोर पा रही थी। जैसे – जैसे युग बदलने लगा उसी के उनुरूप सामाजिक और व्यक्तिगत मान्यताओं की पुरानी हवेली चरमराकर गिरने लगी और नये युग धर्म के साथ घुटती स्त्री पूर्ण स्वतंत्रता को वरण करने हेतु दोनों बाहें फैलाये मुक्त आकाश की ओर देख तेज कदमों से आगे बढ चली। यह धारा महानगर से होती हूई, उपनगर, कस्बो, गावों, गलियों तक अब स्पष्ट रूप से दिखने लगी है। कामकाजी महिलाएँ रोजी – रोटी कमाने के लिए चली, कुछ मनोरंजन हेतु कामकाजी बनी, वहीं कुछ स्त्रियाँ देश को जागृति देने हेतू समाज में नये परिवर्तन हेतू कामकाजी बनी। वही कुछ स्त्रिया देश को नयी जागृति देने हेतु समाज में नये परिवर्तन हेतु कार्यशील हुई। कामकाजी नारी की मानसिकता को यथार्थ के धरातलपर प्रस्तुत किया है। दांपत्य जीवन का कलह, संघर्ष तनाव और अंत में विछाहे आदि को चित्रित किया गया है। 'मन न भये दस बीस' 'राग–विराग' ये उपन्यास इसके उदाहरण है।

स्त्री घर और बाहर की दोहरी भूमिका निभाते – निभाते वह चिडचिडी स्वभाव की बन जाती है। जो विधवा अवस्था में नौकरी तो कर लेती है किंतू अपने आपको असुरक्षित सा अनुभव करती है।

चंद्रकांता के साहित्य में आज के भारत का समाजशास्त्रीय मानचित्र मिलता है, वह नारी – जीवन तथा उससे जुडी असंगतियों, विसंगतियों, विडंबनाओं, असहमतियों, टकरावों, छटपटाहटों, रूग्णताओं, पीडाओं व करूणावर्त्त पुकारों को हवाला देता है।

निष्कर्षत:

घर और बाहर के बीच फंसी नारियाँ अब भी यंत्रनाएँ भोग रही हैं – शारीरिक भी और मानसिक भी। विभिन्न आजीविकाओं में स्त्री – पुरूषों के बीच प्रतियोगिता समानता के भाव की बजाय कटुता को ही जन्म देती है। महिला कथाकारों ने महिलावादी दृष्टीकोण द्वारा यह सिद्ध करने का प्रयास किया है कि समाज में जितनी समस्याएँ अभाव, शोषण व अत्याचार हैं – उन सबकी उपभोक्ता प्रत्यक्ष – परोक्ष रूप में स्त्री ही अधिकतर सिद्ध होती है। प्रथाएँ, धर्म, दंगे, व्यवसाय, विवाद आदि का प्रभाव नारी पर ही पडता है। उन्होंने कथा – समाजद्वारा अपने दृष्टीकोण तथा अपनी समस्याओं के बाह्य व आंतरिक रूपों को स्वयं प्रकट करना चाहा। इस प्रकार कामकाजी नारी को समस्याओं का सामना करना पडता है।

संदर्भ ग्रंथ:

१. महिला कथाकार समाजशास्त्रीय एवं भाषिक संकल्पना – डॉ. कश्मीरी लाल.
२. नेमिचंद जैन. अधूरे साक्षात्कार – १५७
३. कृष्णा सोबती के उपन्यासों में प्रतिबिंबित नारी जीवन – डॉ. सुलोचना नरसिंगराव अंतरेड्डी
४. हिंदी के सामाजिक उपन्यासों में नारी – डॉ. रेवा कुलकर्णी
५. साठोत्तरी कहानी और महिला लेखिकाएँ – डॉ. विजया वारद (रागा)
६. समकालीन महिला लेखन – डॉ. ओमप्रकाश शर्मा
७. हिंदी के समकालीन महिला उपन्यासकार – डॉ. एम. वेंकटेश्वर
८. देवेश ठाकूर के उपन्यासों में नारी – डॉ. माधवी बागी
९. हिंदी व्यंग्य साहित्य में नारी – डॉ. शैलजा माहेश्वरी

Role of ICT in Teaching – Learning & Evaluation.

Prof. Shubhangi Monohar Khude
Arts, Commerce & Science College Ashti, Tal – Ashti Dist – Beed
Mob – 9049502216
Email – shubhangikhude10@gmail.com

Introduction –

ICT is the technology required for information processing particular, the use of electronic computers, communication device & software applications to convert, store, protect , process transmit & retrieve information from anywhere, anytime. Teacher use ICT for making teaching learning process easy & need for very interesting also essentials in 21st century, uses of ICT are growing faster in every field education sector are exempted from that. Information communication technology in education is the most important mode of education most of the colleges & education institutes in India are providing smart classroom, Audio-video Lab, Computer Lab, teleconferencing facilities etc. it is not sufficient in today's education environment.

❖ **Objectives –**

i. To study in ICT Teaching methods on various subject.
ii. To introduce participants to a state of being different of online resources for teaching & learning.
iii. To examine the part played by a person or thing in a particular situation of ICT in language teaching.

❖ **Description -**

ICTs are basically information-handling tools a varies set of goods applications process distribute & services that are used for produce, store & exchanging information. ICT helps facilitate the transaction between producers & users by keeping the students update & enhancing teacher's teachers capacity & ability fostering alive contact between the teacher & the student through e-mail, chat sessions etc. ICT benefits are it has the potential to improve education system of the nation. It can transform the nature quality of education as a whole. It enables a knowledge network for students. Its can store multiple teaching & learning process easy & comprehensive. The use of ICT in the classroom teaching learning is very important & essential for it makes adequate preparation for opportunities for teachers & students to operate, store, manipulate & retrieve information, encourage independent & active learning & self-responsibility for learning such on distance teaching someone to have interest in or enthusiasm for something motivated teachers & students. The new ICT enables self paced learning through various tools such as assignments, computer etc. as a result of this the teaching learning enterprise has become more productive & meaningful despite huge efforts to position information & communication technology as a central tenet of university teaching & learning the fact remains that many university students & faculty make only limited formal academic use of computer technology. Todays world called as technological world. Many technological software are helpful to make the teaching & learning process easy & comprehensive. The information & communication technology (ICT) is an umbrella term that included any communication device or application, encompassing radio, television, cellular phones, computer & network hardware &

References :-

1. Larsen, K. and vincent- Lancrin, S (2005). The impact of ICT on tertiary education: Advances and promises. A paper presented at the organisation for economic co-operation and development (OECD) | NSF | U. Michigan Conference "Advancing Knowledge and the Knowledge Economy". 10-11 Jan 2005 Washington DC.
2. Balanskat cat A; Blamire, R. and Kefala, S (2006) The ICT Impact Report : A review of studies of ICT impact on school in Europe. European schoolnet, extracted from http://colccti,colfinder.org/sites/default/files/ict_impact_report_o.pdf
3. Bhaurao, P.B. (2015) . Role of ICT in Indian digital education system. Indian Streams research journal, 5(2), 1-5.
4. Machin, S. et al. (2006) "New technologies in schools : Is there a pay off ?" , Germany : Institute for the study of Labour. Accessed at : http://ftp.Iza.org/dp2234.pdf#search=%22New%20technologies%20in%20school%3A%201S%20there%20a%20Pay%20off%3F%20%22

Impact Factor - 6.625 ISSN - 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

Multidisciplinary International E-Research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

December-2019 Special Issue – 209

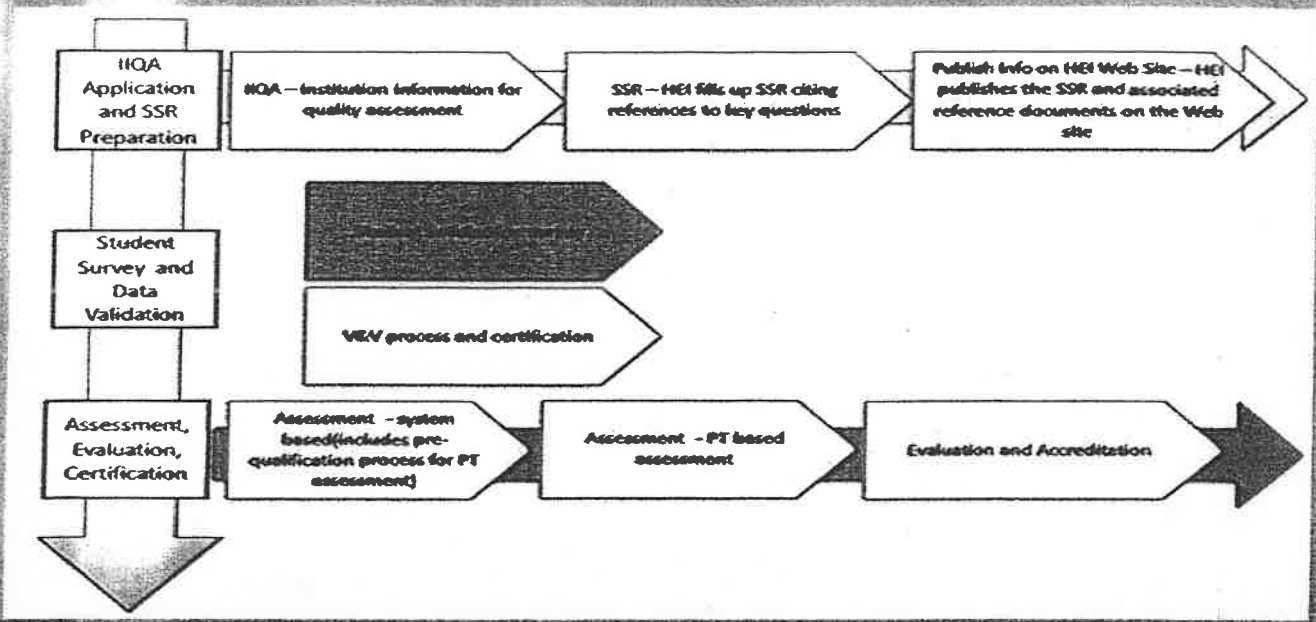

NAAC : Revised Accreditation Framework and Quality Improvement Strategies in Higher Education

Guest Editor :
Prin. Dr. H. G. Vidhate
Principal,
Anandrao Dhonde alias Babaji Mahavidyalaya,
Kada, Tq. Ashti, Dist. Beed - 414202
[M.S.] India

Executive Editor :
Dr. B. S. Khaire
Coordinator IQAC
A. D. Alias Babaji Mahavidyalaya,
Kada, Tq. Ashti, Dist. Beed - 414202
[M.S.] India

Chief Editor -
Dr. Dhanraj T. Dhangar (Yeola)

I
E
R
N
A
T
I
O
N
A
L
R
E
S
E
A
R
C
H
F
E
L
L
O
W
S
A
S
S
O
C
I
A
T
I
O
N

This Journal is indexed in :
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmoc Impact Factor (CIF)
- Global Impact Factor (GIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)

For Details Visit To : www.researchjourney.net

SWATIDHAN PUBLICATIONS

Impact Factor - 6.261 ISSN - 2348-7143
INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION
RESEARCH JOURNEY
INTERNATIONAL E-RESEARCH JOURNAL
PEER REVIEWED & INDEXED JOURNAL
September - 2019 SPECIAL ISSUE -193 (B)

Role of NAAC in the Educational Development of Higher Education in India

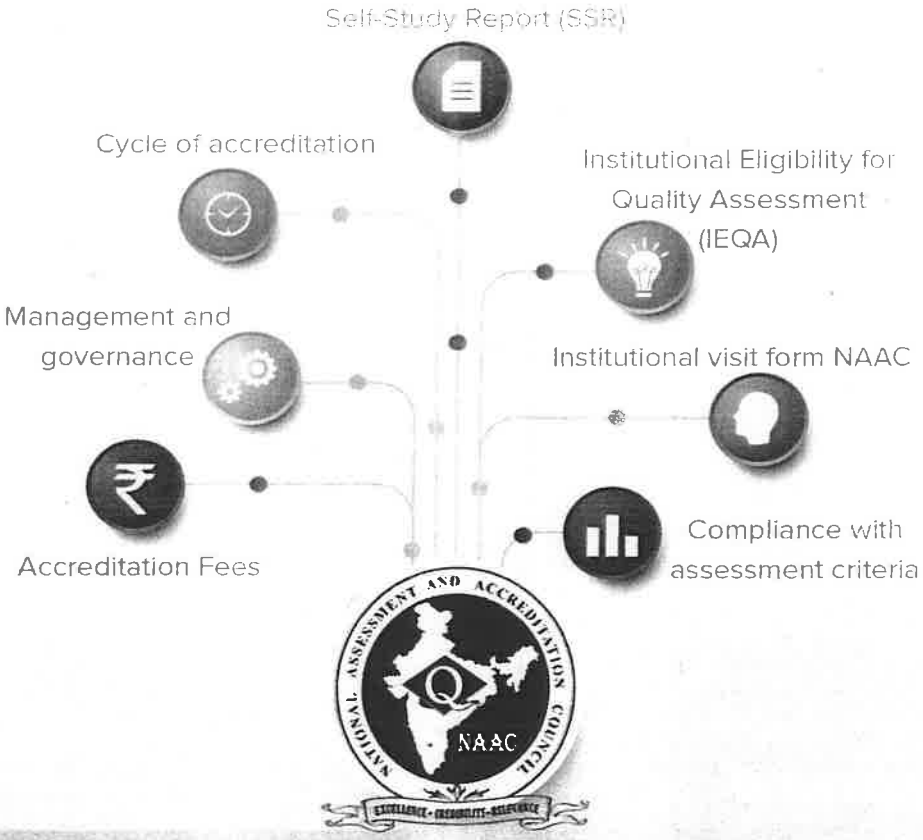

Guest Editor :
Dr. Sopan Nimbore
Principal,
ATSPM's Arts, Commerce & Science College, Ashti, Dist. Beed (M.S.) India

Associate Editor :
Prof. Niwrutti Nanwate
Head, Department of Economics
ATSPM's Arts, Commerce & Science College, Ashti, Dist. Beed (M.S.) India

Executive Editor :
Dr. Abhay Shinde
Co-ordinator, IQAC
ATSPM's Arts, Commerce & Science College, Ashti, Dist. Beed (M.S.) India

Chief Editor :
Dr. Dhanraj T. Dhangar (Yeola)

RESEARCH JOURNEY

This Journal is indexed in :
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmos Impact Factor (CIF)
- Global Impact Factor (GIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)

SWATIDHAN PUBLICATIONS

RESEARCH JOURNEY' International Multidisciplinary E- Research Journal
Impact Factor - (SJIF) - 6.261, (CIF) - 3.452(2015), (GIF)–0.676 (2013)
Special Issue 193 (B) : Role of NAAC in the Educational Development of Higher Education in India
ISSN : 2348-7143
September-2019

INDEX

No.	Title of the Paper	Author's Name	Page No.
1	Recommendation for Improving Quality of Indian Higher Education	Dr. D. K. Khokle	05
2	Assessment and Accreditation Benefits to Higher Education Institutions	Dr.Bhimrao Mankare	08
3	Skill Based Learning: Necessity for Employability	Dr. Manisha Kotgire	11
4	ICT Based Teaching and Learning in Education	Dr. N.B. Kale	14
5	Role of NAAC in Higher Education to Enhance Quality Education	Dr. Sanjay Sawate	17
6	The Role of Governance Leadership and Management in the Process of NAAC	Prof. Sunil Mhankale	24
7	Best Practices of Library: Key to Better Performance in NAAC	Dr. Anuja Kastikar	27
8	Role of ICT Teaching in Quality Improvement	Dr. Gorakhnath Phasale	30
9	Challenges Facing NAAC in Rural Area	Prof. Rupesh Wankhade	37
10	Skill Development for Employments in India	Dr. Prakash Rodiya	40
11	Revised Process of Assessment and Accreditation of Affiliated Colleges by NAAC- A Step towards Quality Enhancement	Dr. Shivaji Pawar	44
12	Role of Students and Teachers in Teaching Learning	Niwrutti Nanwate	48
13	Institutional Best Practices Enrich Students, Community and Nation	Dr.G S Bhopalkar, Dr.B S Waghmare	52
14	Information Communication Technology in Higher Education	Dr. Madan Shelke	56
15	Operational Function of IQAC	Dr. Sakharam Wandhare	59
16	Scenario of Present Education System of India	Prof. Anant Khose	63
17	Role of ICT in Higher Education for the 21st Century	Prof. Ramesh Bharudkar	68
18	Quality Assurance in the Regualar Working Process of College	Dr. Rajaram Sontakke	71
19	Role of NAAC in the Educational Development of Higher Education in India	Prof. Shubhangi Khude	73
20	Role of IQAC in Higher Educational Institute	Prof. Pathan Jainullakhan, Md. Hayatkhan	75
21	Role of Internal Quality Assurance Cell (IQAC)	Prin. Dr. Sharda Molawane	77
22	NAAC Assessment : A Boost for Higher Education	V. S. Suryawanshi & V. S. Shinde	80
23	Use in ICT Based Teaching and Learning	Prof. Jawahar Chaudhari	84
24	Impact of NAAC on College Library Development	S. A. Mutkule	88
25	ICT Education : Its Benefits and Difficulties	Dr. B. M. Chavan.	93
26	Strategies for Evaluating Teaching Quality	Dr. Mangesh Shirsath	98
27	Teaching and Learning with Technology : Effectiveness of ICT	Dr. S. N. Waghule	101
28	Skill India : Mission towards Employment's	Dr. S. V. Panchagalle & Dr. R. D.Gaikwad	106
29	Naac Accredatation	Mr. Pratap Ranshing	110
30	Higher Education – A Value Building!	Mr.M.B.Gaikwad	113
31	Higher Education in India : Issues and Challenges	Krushna Kamble	116

Role of NAAC in the Educational Development of Higher Education in India

Prof. Shubhangi Manohar Khude
Arts ,Commerce & Science College,
Asthi, Tal. Ashti, Dist. Beed.
Mob-9049502216
Email.shubhangikhude10@gmail.com

Introduction:-

The NAAC functions through its general council & Executive committee comprising educational administrators, policy makers & senior academicians from a cross section of Indian higher education system. Striving to achieve its goals as guided by its vision & mission statements, NAAC primarily focuses on assessment of the quality of higher education institutions in the country. The NAAC methodology for assessment & accreditation is very much similar to that followed by Quality Assurance agencies across the word & consists of self assessment by the institution along with external peer assessment organized by NAAC.

Objectives:

1) To maintain & arrange periodic assessment & Accreditation of HEI_s.
2) To promote teachers for quality in teaching-learning & research.
3) To motivate HEI_s for self Evaluation, autonomy & innovation.
4) To promote faculty for research studies, consultancy & training programmes.

Description:

Throughout the word, higher Education Institutions function in a dynamic environment. The need to expand the system of higher education, the impact of technology on the educational delivery. The increasing private participation in higher education & the impact of globalization have necessitated marked changes in the Indian higher education system. Most of the HEI_s have a remarkable capacity to adopt the changes & at the same time, pursue the goals & objectives that, they have set forth for themselves. Contributing to national development has always been an implicit goal of Indian HEI_s The role of HEI_s is significant in human resource development & capacity building of individuals, to cater to the needs of the economy, society & the country as a whole, thereby, contributing to the development of the nation. Serving the cause of social justice, ensuring equality & increasing access to higher education are a few ways by which HEI_s can contribute to the national development. It is therefore appropriate that the Assessment & Accreditation process of NAAC looks into the ways HEI_s have been responding & contributing towards national development.

Although skill development is crucial of students in the job market, skills are of less value in the absence of appropriate value systems. The HEI_s have to shoulder the responsibility of including desirable value systems among students. In a country like India, with cultural pluralities & diversities, it is essential that student imbibe the appropriate values commensurate with social, cultural, economic, & environmental realities, at the local, national & universal levels. The NAAC assessment therefore examines how these essential & desirable values are being inculcated in the students, by the HEI_s.

Most of the significant developments that one can observe today can be attributed to the impact of science & Technology. While the advantages of using modern tools & technological innovations in the day-to-day –life are well recognized, the corresponding changes in the use of new technologies, for teaching learning & governance of HEI_s, lives much to be desired. Technological advancement & innovations in educational transactions have to be undertaken by all HEI_S, to make a

visible impact on academic development as well as administration. At a time when our educational institutions are expected to perform as good as their global partners, significant technological innovations have to be adopted. Traditional methods of delivering higher education have become less motivating to a large number of students. To keep pace with the development in other spheres of human endeavor, HEI_s have to enrich the learning experiences of their students by providing them with state-of-the-art educational technologies. The campus community must be adequately prepared to make use of Information & communication Technology optimally, conscious effort is also needed to invest in hardware & to orient the faculty suitably.

Conclusion:

NAAC arranges periodic assessment & accreditation of higher educational institutions for quality maintenance . It provides specific academic programmes & enriches academic environment for promotion of quality in teaching – learning & research in higher education institutions. It also motivates for self evaluation, autonomy & innovations in higher education. It undertake quality related research studies, consultancy & training programmes. It enhances collaboration with other stakeholders in society by providing sustainable parameters. In short we can say that, NAAC plays an important role in overall progress of the higher educational institutions.

References :

1. Globalization & Indian Higher Education university News vol. 48 kiran (2010)
2. Higher Education in a globalizing world. New Delhi, Isha books. Pandey V.C. (2005)
3. NAAC- A Decade of dedication to quality Assurance, Stella Dr. Antony, 2004
4. Accreditation & Higher education : What do you need to know? Venable, Melissa (2011)

Impact Factor - 6.261 ISSN - 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION

RESEARCH JOURNEY

INTERNATIONAL E-RESEARCH JOURNAL

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

February - 2019 Special Issue- 105 (A)

हिंदी साहित्य और सिनेमा

अतिथि संपादक :

डॉ. एस.आर. निंबोरे

प्राचार्य,

कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय,

आष्टी, तह. आष्टी, जि. बीड

विशेषांक संपादक :

प्रा. जे.एम. पठाण

हिंदी विभागाध्यक्ष,

कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय,

आष्टी, तह. आष्टी, जि. बीड

सहयोगी संपादक :

प्रा. एस.एम. खुडे

कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय, आष्टी

प्रा. ए.बी. टाळके

भगवान महाविद्यालय, आष्टी

प्रा. व्ही.बी. गव्हाणे

गांधी महाविद्यालय, कडा

डॉ. जी.बी. मंडलिक

ए.डी. महाविद्यालय, कडा

प्रा. एस.पी. पवार

भगवान महाविद्यालय, आष्टी

मुख्य संपादक :

डॉ. धनराज धनगर

This Journal is indexed in :

- UGC Approved Journal
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmos Impact Factor (CIF)
- Global Impact Factor (GIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)
- Indian Citation Index (ICI)
- Dictionary of Research Journal Index (DRJI)

SWATIDHAN PUBLICATIONS

अनुक्रमणिका

अ.क्र.	शीर्षक	लेखक/लेखिका	पृ.क्र.
1	सिनेमा और पटकथा लेखन	प्रा. जयनुल्लाखान पठाण	05
2	हिंदी साहित्य ,समाज ओर सिनेमा	डॉ . दत्ता साकोळे	09
3	सिनेमा ओर हिंदी साहित्य	डॉ .चित्रा धामणे	14
4	हिंदी साहित्य ओर सिनेमा	डॉ. सूर्यकांत दळवे	18
5	इक्कीसवी सादी का सिनेमा	प्रा. एस .टी. मुजावर	21
6	हिंदी कथा साहित्य और सिनेमा	आर. के. देशपांडे	24
7	हिंदी साहित्य और सिनेमा	डॉ. विष्णू गव्हाणे	27
8	अपने देश में आपना सिनेमा : शुरुवाती दौर	डॉ. गुलाबराव मंडलिक	30
9	सिनेमा ओर पटकथा लेखन	डॉ. ए. बी . टाळके	34
10	सिनेमा, अभिनय ओर नारी	प्रा. शुभांगी खुंडे	37
11	साहित्य, सिनेमा ओर समाज अंत:संबध	प्रा. पोपट जाधव	40
12	हिंदी सिनेमा ओर पटकथा लेखन	प्रा. अच्युत शिंदे	43
13	प्रेमचंद का साहित्य ओर सिनेमा	डॉ. संगीता आहेर	46
14	साहित्य ओर सिनेमा का संबंध	प्रा. एस. पी पवार	49
15	हिंदी साहित्य ओर सिनेमा	प्रा. जी. बी. जाधव	52
16	सिनेमा साहित्य ओर हिंदी	प्रा. कल्याणी जगताप	54
17	सिनेमा, समाज ओर हिंदी भाषा	डॉ. एस.सी. कारंडे	57
18	हिंदी साहित्य ओर सिनेमा का संबंध	डॉ. अमर वाघमोडे	59
19	हिंदी-मराठी साहित्य और सिनेमा	सीमा पाटील, डॉ.बी.आर.नळे	62
20	हिंदी भाषा ओर सिनेमा का संबंध	माई दोडके	66
21	सिनेमा, साहित्य और हिंदी	प्रा. प्रकाश लहाने	70
22	सिनेमा, साहित्य और हिंदी	डॉ. सुभाष जिते	72

इस अंक के सभी अधिकार प्रकाशकने आरक्षित किये है। प्रकाशित आलेख पुन:प्रकाशित करने से पहले प्रकाशक एवं लेखक की संयुक्त लिखित अनुमती जरुरी है । प्रकाशित आलेखो में व्यक्त मंतव्य केवल लेखक के है, इन मंतव्य से संपादक और प्रकाशक सहमत हो, यह जरुरी नहीं है । आलेख के संदर्भ में उपस्थित कॉपीराईट ***(Originality of the papers)*** *की जिम्मेवारी स्वयं लेखक की है ।*

- संपादक

अनुक्रमणिका

अ.क्र.	शीर्षक	लेखक/लेखिका	पृ.क्र.
1	सिनेमा और पटकथा लेखन	प्रा. जयनुल्लाखान पठाण	05
2	हिंदी साहित्य ,समाज ओर सिनेमा	डॉ . दत्ता साकोळे	09
3	सिनेमा ओर हिंदी साहित्य	डॉ .चित्रा धामणे	14
4	हिंदी साहित्य ओर सिनेमा	डॉ. सूर्यकांत दळवे	18
5	इक्कीसवी सादी का सिनेमा	प्रा. एस .टी. मुजावर	21
6	हिंदी कथा साहित्य और सिनेमा	आर. के. देशपांडे	24
7	हिंदी साहित्य और सिनेमा	डॉ. विष्णू गव्हाणे	27
8	अपने देश में आपना सिनेमा : शुरुवाती दौर	डॉ. गुलाबराव मंडलिक	30
9	सिनेमा ओर पटकथा लेखन	डॉ. ए. बी . टाळके	34
10	सिनेमा, अभिनय ओर नारी	प्रा. शुभांगी खुंडे	37
11	साहित्य, सिनेमा ओर समाज अंत:संबध	प्रा. पोपट जाधव	40
12	हिंदी सिनेमा ओर पटकथा लेखन	प्रा. अच्युत शिंदे	43
13	प्रेमचंद का साहित्य ओर सिनेमा	डॉ. संगीता आहेर	46
14	साहित्य ओर सिनेमा का संबंध	प्रा. एस. पी पवार	49
15	हिंदी साहित्य ओर सिनेमा	प्रा. जी. बी. जाधव	52
16	सिनेमा साहित्य ओर हिंदी	प्रा. कल्याणी जगताप	54
17	सिनेमा, समाज ओर हिंदी भाषा	डॉ. एस.सी. कारंडे	57
18	हिंदी साहित्य ओर सिनेमा का संबंध	डॉ. अमर वाघमोडे	59
19	हिंदी-मराठी साहित्य और सिनेमा	सीमा पाटील, डॉ.बी.आर.नळे	62
20	हिंदी भाषा ओर सिनेमा का संबंध	माई दोडके	66
21	सिनेमा, साहित्य और हिंदी	प्रा. प्रकाश लहाने	70
22	सिनेमा, साहित्य और हिंदी	डॉ. सुभाष जिते	72

इस अंक के सभी अधिकार प्रकाशकने आरक्षित किये है। प्रकाशित आलेख पुन:प्रकाशित करने से पहले प्रकाशक एवं लेखक की संयुक्त लिखित अनुमती जरुरी है । प्रकाशित आलेखो में व्यक्त मंतव्य केवल लेखक के है, इन मंतव्य से संपादक और प्रकाशक सहमत हो, यह जरुरी नहीं है । आलेख के संदर्भ में उपस्थित कॉपीराईट ***(Originality of the papers)*** *की जिम्मेवारी स्वयं लेखक की है ।*

- संपादक

RESEARCH JOURNEY International E- Research Journal
Impact Factor (SJIF) - 6.261, (CIF) - 3.452(2015), (GIF)-0.676 (2013)
Special Issue 105 (A)- हिंदी साहित्य और सिनेमा
UGC Approved Journal
ISSN 2348-7143
February-2019

सिनेमा, अभिनय और नारी

प्रा. शुभांगी मनोहर खुडे,
कला, वसणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय, आष्टी,
ता. आष्टी, जि. बीड।
भ्रमणध्वनि क्र. ९०४९५०२२१६
ई–मेल% shubhangikhude10@gmail.com

भारतीय सिनेमा निर्माण का आधार साहित्य रहा है। भारतेंदु हरिश्चंद्र के नाटक पर दादासाहेब फलके निर्मित 'राजा हरिशचंद्र' प्रथम मूकपट से शुरू हुई भारतीय सिनेमा की विकास यात्रा आज एक बहुत बडी फिल्म इंडस्ट्री में रूपांतरीत हुई है। १९३१ में इस मूकपट को संवादों के रूप में वाणी मिली। इसके बाद दाक्षिणात्य और प्रदेशिक भाषाओं में विभिन्न विषयों पर अनेक सिनेमाओं का निर्माण हुआ। भारतीय सिनेमा में आज दिखाई देने वाली अराजकता, मूल्यहीनता, अतिरंजकता, अमानवीयता के लिए पूँजीपति जिम्मेदार है। क्योंकि भारतीय सिनेमा की ओर केवल व्यावसायिकता की दृष्टि से देखा जा रहा है। भारतीय सिनेमा समाज की उस तरह सही तस्वीर पेश नहीं करता है जिस तरह साहित्य करता है। क्योंकि सिनेमा कुछ व्यावसायिक लोगों के हाथों है जो ये सब सोचना ही नहीं चाहते। साहित्य और सिनेमा ने समाज को अधिक प्रभावित किया है। एक सिनेमा निर्माण में निर्माता–दिग्दर्शक का जो महत्व होता है उतना ही महत्व कलाकार, कॅमेरामन, साउंड रिकोडर, संगीतकार, गीतकार, नृत्यकलाकार, संकलक, मेकपमैन, ड्रेस डिजाइनर, पटकथा लेखक, स्पॉटबॉय का होता है। ये सब अपनी अपनी कला का आवश्यकतानुसार सिनेमा में योगदान देते है। अभिनय कला का महत्व भाषा से भी बढकर है। सिनेमा में 'अभिनय कला' रीड के समान है। अभिनय में साउंड, मेकप, पोशाख, संगीत कला जान डालते हैं। पौराणिक, ऐतिहासिक, आधुनिक, ग्रामीण और शहरी परिवेश के अनुकूल पोशाख–योजना के कारण तत्कालीन संस्कृति का, वास्तविकता का और समस्याओं का पता चलता है। डॉ. विजय अग्रवाल सिनेमा और ललित कलाओं के अंत: संबंधों के बारे में लिखते हैं कि, ''सिनेमा सभी ललित कलाओं का कोलाज है।''[१]

स्वतंत्रता से पहले मानवीय संवेदना, आदर्श चरित्र, समाज सुधार–लोकशिक्षा को सिनेमा में स्थान था। तकनीक की दृष्टि से सिनेमा अविकासित होने के कारण प्रथमिक चरण का सिनेमा लोगों को आकर्षित करने इतना सशक्त नहीं था। सिनेमा के कालाकार केवल कला द्वारा प्रेक्षकों की सेवा करना चाहते थे। आज कलाकार सिनेमा की ओर करियर की दृष्टि से देखने लगे हैं। सिनेमा से संबंधित हर एक क्षेत्र में स्पर्धा है। इसलिए ''स्वतंत्रता के पश्चात् जैसे–जैसे व्यवस्था और जीवन के रूप, जीवनमूल्य बदलते, वैसे–वैसे फिल्मों के विषय भी बदले। पहले कोमल संवेदनाओं से भरी फिल्में बनती थी। बाद में स्त्री–पुरूषों में आया खुलापन और उससे उत्पन्न तणाव और कटुता, वर्ग संघर्ष, सांप्रदायिकता, आर्थिक विपन्नता, शोषण, दलितों की समस्याएँ और सामाजिक एवं राजनैतिक स्तर का भ्रष्टाचार आदि...।''[२]

सिनेमा के प्रारंभिक दौर में स्त्री का कीरदार भी पुरूष पात्र ही निभाते थे। धीरे धीरे स्त्री सिनेमाओं में दिखाई देने लगी। स्त्री ने सिनेमा को इतनी उँचाई पर पहुँचाया है कि आज बिना अभिनेत्री के सिनेमा की कल्पना करना भी संभव नहीं है। कई नायिका प्रधान हिट फिल्में बनाने में निर्माताओं को सफलता मिली है। सामाजिक सूक्ष्मताओं, मानवीय मनोभावों को सिनेमा में बहुत सूक्ष्मता के साथ प्रदर्शित करने का प्रयास हमेशा

'RESEARCH JOURNEY' International E- Research Journal
Impact Factor - (SJIF) – 6.261, (CIF) - 3.452(2015), (GIF)–0.676 (2013)
Special Issue 105 (A)- हिंदी साहित्य और सिनेमा
UGC Approved Journal
ISSN : 2348-7143
February-20

किया है। "हिंदी फिल्मे मानवीय संवेदनाओं, गहन अनुभूतियों, जीवन के मधुर एवं कटु अनुभवों को, जीवन की उपलब्धियों को बडी मार्मिकता एवं सपष्टता से दृश्यात्मक रूप से अभिव्यक्त करती है।"[3]

व्यावसायिकता को ध्यान में रखकर निर्माण की गई कुछ फिल्मों में स्त्री देह–प्रदर्शन को जरूर प्रमुखता दी गई है। लेकिन उँचे दर्जे की कई फिल्मों में नारी को एक मानवी के रूप में दिखाई देने पर बल दिया जाने लगा है। सिनेमा में स्त्री की शुरूआत मात्र एक साधन के रूप में हुई जरूर थी, लेकिन कुछ ऐसी फिल्में भी लगातार बनती रही जिनके द्वारा स्त्री का एक नया रूप आज हमारे सामने उपस्थित है, जो सामान्य और बेहतर होता जा रहा है। माधुरी दीक्षित जैसी अभिनेत्रियों के अभ्सिनय में इतनी सहजता है कि उसकी सामान्य बातचित, दैनंदिन व्यवहार भी अभिनय के समान लगते हैं। उसकी लगभग सभी फिल्में बॉक्स ऑफिस पर हिट रही उसका कारण उसके अभिनय की सहजता है।

सिनेमा के लिए जितनी जरूरत कलाकारों की होती हैं उतनी ही आवश्यकता कैमरा, लाईटस् और यांत्रिक सदृश्य उपकरनों की होती है। फिल्म इडिटींग एक कौशल है। इसमें अनावश्यक चित्रित सामग्री कॉट–छॉट करके समय का नियोजन किया जाता है। प्रसंग–घटनाओं की आवश्यकतानुसार ध्वनि, संगीत, के उतार चढाओं को नियंत्रित किया जाता है। लेकिन कभी कभी इस कॉट–छॉट में सिनेमा की असली को क्षति पहुँती है। सौं वर्ष पुराने सिनेमा की बुनियाद 'कला' है। तकनीकी विकास के कारण काला का गला घोंटा जा रहा है। आज सिनेमा में कलात्मकता कम और व्यावसायिकता अधिक दिखाई देने लगी है। भारतीय संस्कृति में कला का महत्व समाज सुधार, मनोरंजन, लोक–शिक्षा के कारण है। लेकिन सिनेमा कला का गलत प्रयोग होने के करण और "फैशन परस्त पाश्चात्य संस्कृति के अनुकरण से फिल्मों में बहुत ही छिछलापन, अश्लीलता और निरर्थकता आने लगी है। जो फिल्में कभी सामाजिक सुधार का आधार थी उसमें आज समाज विघातक दृश्य दिखाई देते हैं। आज की ज्यादातर फिल्में ऐसी बनाई गई हैं, जिसको परिवार के सभी सदस्य एकत्रित बैठकर देख नहीं सकते। अश्लिल शरीर प्रदर्शन और विभत्स नृत्य का विपरित असर युवा पीढी पर हो रहा है। ये फिल्में सच्चाई की जमीन से काफी दूर जाती हुई दिखाई दे रही है।"[4] संगीत, नृत्य जैसी लोककलाओं का उत्थान सिनेमा के कारण सबसे अधिक हुआ है। संगीतकार, नृत्यकार, कैमरामन को रोजगार उपलब्ध हुआ और साथ ही अपनी कला प्रदर्शित करने के लिए एक सशक्त माध्यम मिला। जैसे जैसे सिनेमा का विकास होता गया वैसे वैसे ड्रेस डिजाइनिंग, डबिंग, फिल्म इडिटिंग, संवाद लेखन जैसे नवनिर्मित ज्ञान के विभिन्न माध्यम सामने आए।

आज भारतीय सिनेमा पर यह अरोप लगाया जा रहा है कि महिलाओं से सौंदर्य प्रदर्शन की आड में अश्लील अभिनय करवाया जा रहा है या अपना ग्लॉमर बनाए रखने के लिए वे ऐसी अभिनय कला का प्रदर्शन कर रही है। जिसके कारण समकालीन सिनेमा बाजारवाद की उत्पाद प्रणाली का अभिन्न अंग बन चुका है। क्योंकि फिल्मी साहूकारों के लिए हिरोइन एक 'प्रोडक्ट' मात्र है, जिसके द्वारा वे धन कमाते हैं। अतः जब तक हम कलाकारों की कला की इज्जत नहीं करेंगे, सिनेमा को कला की दृष्टि से नहीं देखेंगे तब तक फिल्मी साहूकार कला की पवित्रता नहीं समझेगे। फिल्म इंडस्ट्री में विद्यमान साहूकारों की ऐसी बदली हुई सोच के कारण हिरोईन के बदन का व्यापार चलता है। इस बात की कडी आलोचना करते हुए राही मासूम रजा लिखते हैं, "बदन का व्यापार उस वक्त तक बंद नहीं हो सकता जब तक फिल्म साहूकार के गद्दी उनके नीचे से निकाली नहीं जाती और यह तभी हो सकता है जब हम फिल्मों की इज्जत करना शुरू करें।"[5]

लोगों की इसी गलत प्रवृत्ति के फलस्वरूप अंतिम दशक में सिनेमाओं में 'अइटम सॉग' की शुरूआत हुई। ऐसे गीतों में द्विअर्थी शब्दों का प्रयोग करके निर्देशक हिरोईन का क्लोजअप में शुटिंग करते हैं। असल मे आइटम सॉग का प्रारंभ 'खलनायक' सिनेमा का 'चोली के पिछे क्या है?' गीत से हुई थी। बाद में हिंदी सिनेमाओं में आइटम सॉग की एक परंपरा दिखाई देने लगी। क्योंकि कालांतर में हिंदी सिनेमाओं में 'छम्मा छम्मा', 'शिला की जवानी', जैसे गीतों ने धूम मचा दी। इससे यह स्पष्ट होता है कि सिनेमा में कला की उपासिका नारी की प्रतिमा जितनी उँची होनी चाहिए थी, उतनी नहीं बन पायी। भारतीय संस्कृति में चित्रित नारी का बिंब कुछ अलग ही है। के अनुकूल नहीं है। किसी सिनेमा की अभिनेत्री की लोकप्रियता वह कितना स्तरीय अभिनय करती है, इस पर न होकर वह कितने कम कपडों में पर्दे पर आती है, वह सिनेमा बिजनेस किस प्रकार करती है, लोगों को किस प्रकार आकर्षित कर सकती है, इस पर है। नारी की ऐसी अवस्था एक स्वस्थ समाज के लिए सामाजिक अधपतन से कम नहीं है।

घर बैठकर सिनेमा का आनंद लेनेवाले दर्शकों को पुन: सिनेमाघरों तक खींच लाने का प्रयास मासाला फिल्मों ने किया। 'मसाला फिल्मो' की शुरूआत लोगों की बदलती सोच का नतिजा है। एक साथ विभिन्न तरह के दर्शकों को सामने रखकर मसाला फिल्मों का निर्माण आकल हो रहा है। कोई रोमांस का उपासक होता है तो कोई एक्शन फिल्मों का दिवाना। कोई कॉमेडी फिल्मों में रस लेता है तो कोई ड्रामा को प्राथमिकता देता है। इन सबसे अलग मेलोड्रामा की ओर आकर्षित होने वाले दर्शक भी कम नहीं है। इन सभी का एक ही फिल्म में एक साथ आनंद लेने के लिए दर्शक मसाला फिल्में की ओर आकर्षित हो रहे है। ऐसी फिल्में प्रधानता: अक्षय कुमार, अजय देवधन, संजय दत्त और सभी कॉमेडियन अभिनेताओं का समावेश होता है। इन फिल्मों के दौर में भी नारियों को कोई उँचा स्थान नहीं मिला। उनकी अवस्था अन्य सिनेमाओं के समान ही रही है। फिरभी ''नए विषय और सोद्देश्य मनोरंजन ने फिल्मों को नई गति दी है। हिंदी सिनेमा के दर्शक ऐसे देशों में भी बढें हैं जहाँ हिंदी नहीं बोली जाती लेकिन कई अर्थों में वहाँ की संस्कृति भारतीय संस्कृति से मेल खाती है। उदाहरण के लिए 'ईरान' में हिंदुस्तानी कम ही रहते हैं लेकिन वहाँ हिंदी सिनेमा का बडा बाजार है।''[६]

अंत में केवल इतना ही कहा जा सकता है कि सिनेमा और समाज का संबंध बहुत गहरा है। वैसे देखा जाए तो सिनेमा का अच्छा और बुरा दोनों प्रकार का प्रभाव समाज पर पडता है। फिर भी भारतीय आदर्श परिवार और आदर्श सांस्कृति का दर्शन कराने वाली फिल्में आज समाज में स्वीकार्य है। अनेक लोगों की एक साथ मेहनत का परिणाम सिनेमा होता है। सिनेमा सृजन के लिए टीम वर्क की आवश्यकता होती है यह स्पष्ट हुआ है।

संदर्भ ग्रंथ:–

१. सिनेमा की संवेदना–डॉ. विजय अग्रवाल, पृ.क्र.११
२. साहित्य, समाज और हिंदी सिनेमा–डॉ. सुनील बनसोडे, पृ.क्र.३४३
३. साहित्य, समाज और हिंदी सिनेमा–डॉ. सुनील बनसोडे, पृ.क्र.३४२
४. साहित्य, समाज और हिंदी सिनेमा–डॉ. सुनील बनसोडे, पृ.क्र.३१४
५. सिनेमा और संस्कृति–राही मासूम रजा, पृ.क्र. ५३
६. हिंदी सिनेमा की यात्रा–संपादक–डॉ. पंकज शर्मा, पृ.क्र.१०८

Impact Factor – 6.261 ISSN – 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

International E-Research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL
January-2019 Issue – 114 (B)

Recent Trends in Research

Chief Editor -
Dr. Dhanraj T. Dhangar,
Assist. Prof. (Marathi)
MGV'S Arts & Commerce College,
Yeola, Dist – Nashik [M.S.] INDIA

Executive Editors :
Prof. Tejesh Beldar, Nashikroad (English)
Dr. Gajanan Wankhede, Kinwat (Hindi)
Mrs. Bharati Sonawane-Nile, Bhusawal (Marathi)
Dr. Rajay Pawar, Goa (Konkani)

This Journal is indexed in :
- University Grants Commission (UGC)
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmoc Impact Factor (CIF)
- Global Impact Factor (GIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)

For Details Visit To : www.researchjourney.net

SWATIDHAN PUBLICATIONS

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION

'RESEARCH JOURNEY' International E- Research Journal
Impact Factor - (SJIF) - 6.261, (CIF) - 3.452(2015), (GIF)-0.676 (2013)
Issue 114 (B) - Recent Trends in Research
UGC Approved Journal
ISSN : 2348-7143
January-2019

INDEX

No.	Title of the Paper	Author's Name	Page No.
	हिंदी विभाग		
1	अहिंसावादी चिन्तक के रूप मे गांधी जी के विचारो की प्रासंगिकता : एक अध्ययन	डॉ.शिखा जैन	06
2	बाबासाहब का भारतीय पत्रकारिता में योगदान	डॉ.सुनिल चव्हाण	11
3	कवी अज्ञेय एवं बा.सी. मर्ढेकर [मराठी] के काव्य में मानवतावाद	डॉ.मीनल बर्वे	17
4	प्रवासियों के साथ समाज कार्य : एक उभरता हुआ समाज कार्य क्षेत्र	संजीव कुमार	20
5	हिंदी में अनुदीत पशु –प्रतिकात्मक नाटक	डॉ. दीपा कुचेकर, राजेश झनकर	26
6	शैलेश मटीयानीकृत 'बोरिवली से बोरीबंदर तक' उपन्यास में महानगर – बोध	डॉ. संजय ढोडरे	31
7	कैलाशचंद्र शर्मा के उपन्यासोमें मध्यमवर्गीय परिवार का जीवन संघर्ष	डॉ.महेंद्र रघुवंशी	34
8	नोकर की कमीज में व्यक्त निम्न मध्यमवर्ग	डॉ.परमेश्वर काकडे	37
9	हिंदी काव्यानुवाद की समस्याएँ एवं समाधान	डॉ. संजय महेर	40
10	हिंदी अनुवाद का स्वरूप और रोजगार के अवसर	डॉ. शरद कोलते	43
11	आधुनिक कविता में दलित विमर्श	प्रा.मारुती नायकू	46
12	हिंदी उपन्यासों का बदलता स्वरूप	प्रा. शुभांगी खुडे	52
13	निरुपमा सेवती के कहानियों में चित्रित विद्रोही नारी	डॉ.राहुल भदाणे	55
14	पंत का प्रगतीवदी दृष्टीकोन	डॉ. शोभा रावत	58
15	'डूब एवं पार' उपन्यास में चित्रित पर्यावरण बचाव मुहीम में यशस्वीनी का योगदान	डॉ. के.डी.बागुल	62
16	आधुनिक राजनीतिक चिंतक : पंडित जवाहरलाल नेहरू	डॉ. सुनिल चकवे	65
17	'मुक्तीपर्व' उपन्यास में दलित चेतना	डॉ. श्रीरंग वट्टमवार	68
18	खरगोन जिलें में लाल मिर्च व्यवसाय में कार्यशील पुंजी का विश्लेषणात्मक अध्ययन	डॉ.दिनेश अग्रवाल	70
19	'श्रीमद्भागवत पुराण' में वर्णित 'गजेंद्र मोक्ष' का महत्त्व	नीतू वाला	74
20	अमृता प्रीतम के उपन्यासों में नारी एवं मानवाधिकार	डॉ. शोभा रावत	78
21	मानव-जीवन के परिप्रेक्ष्य में दर्शनशास्त्र की महत्ता	शम्पू राणी	82
22	नई सदी के साहित्य को मुस्लिम लेखकों की देन	शाजीया बशीर	85
23	रामकुमार वर्मा के एकांकियो में चित्रित बौद्ध युग	डॉ. धीरज व्हत्ते	89
24	शिवानी की कहनियो में स्त्रियों का सामाजिक-जीवन	प्रा. शेख गणी	94
25	हिंदी की प्रमुख स्त्री कहानियों में स्त्री-जीवन	डॉ. खाजी एम. के.	98
26	हिंदी साहित्य का फिल्मांतरण	किशोर ओहोळ	102
	मराठी विभाग		
27	सायबर हल्ले : राष्ट्रीय सुरक्षेस आव्हान	प्रा. उपेंद्र धगधगे	107
28	महाराष्ट्र राज्य क्रीडा धोरण २०१२ ची विद्यापीठ व महाविद्यालयीन स्तरावरील अंमलबजावणी व त्याच्या परिणामांचा चिकित्सक अभ्यास	प्रा.आर.एस.देवकाते, शरद आहेर	112
29	साहित्य कोहिनूर : अण्णाभाऊ साठे	डॉ.राजेंद्र सांगळे	120
30	मराठा साम्राज्याचे म्हैसूरकरांसोबत संबंध (विशेष संदर्भ तह)	प्रा.आंबादास बाकरे	124

'RESEARCH JOURNEY' International E- Research Journal
Impact Factor - (SJIF) - 6.261, (CIF) - 3.452(2015), (GIF)-0.676 (2013)
Issue 114 (B) - Recent Trends in Research
UGC Approved Journal
ISSN : 2348-7143
January-2019

हिंदी उपन्यासों का बदलता स्वरूप

प्रा. शुभांगी मनोहर खुडे,
हिंदी विभाग ,
कला, वसणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय, आष्टी,
ता. आष्टी, जि. बीड।
भ्रमणध्वनि क्र. 9049502216
ई–मेलः shubhangikhude10@gmail.com

उपन्यास वर्तमान युग की आधुनिक साहित्यिक विधा है। औधोगिक क्रांति से उत्पन्न पूँजीवादी व्यवस्था ने जीवन की जटिलता और संघर्ष को बढावा दिया। परिणामस्वरूप प्राचीन परंपरावादी जीवन प्रणाली तथा समाज व्यवस्था में बदलाव आया। रूढिवादिता का विरोध होने लगा। इसी बदलती प्रणाली को समग्रतः अंकित करने हेतु नई साहित्य विधा की आवश्यकता महसूस होने लगी। अतः इस आवश्यकता की पूर्ति के लिए हिंदी साहित्य में उपन्यास जैसी लोकप्रिय विधा का जन्म हुआ। अंग्रेजी भाषा के अध्ययन एवं प्रचार–प्रसार के साथ यह नया पाश्चात्य साहित्य प्रकार उन्नीसवीं शती के उत्तरार्ध में भारतीय भाषाओं में प्रवेश कर गया। और तब से लेकर आज तक देशकाल–वातावरण, संवाद, भाषा–शैली, उद्देश्य और कथ्य के स्तर पर हमेशा बदलता रहा है।

उपन्यास के स्वरूप पर विचार करने की आवश्यकता इसलिए है, क्योंकि आज उपन्यास का तात्त्विक विवेचन प्रासंगिक नहीं लगता है। वर्तमान युगीन कुछ उपन्यास कथावस्तुहीन और उद्देश्य रहीत पाए जाते हैं। कथावस्तु, चरित्र–चित्रण और भाषा को लेकर हुए नए प्रयोगों के कारण इस साहित्य प्रकार के स्वरूप में आए दिन परिस्थिति और कालानुरूप बदलाव आए और आ रहे हैं। उपन्यास के जन्म से लेकर आज तक के उपन्यासों पर अगर चर्चा की जाए तो कालानुरूप उसके बदलते स्वरूप को लिखना आसान हो जाएगा।

प्रारंभिक काल में उपन्यास के स्वरूप में कलात्मकता का अभाव था, घटनाओं की अधिकता और चरित्र–चित्रण की कमी थी। सामाजिक, तिलस्मी, जासूसी, ऐतिहासिक, मनोरंजकता जैसे पहलुओं तत्कालीन उपन्यास साहित्य में कथ्य का स्थान प्राप्त था। 'परीक्षा गुरू' में उपदेशात्मकता, 'चंद्रकांता' में तिलस्मी–जासूसी की प्रवृत्ति दिखाई देती है। अतः प्रारंभिक युगीन उपन्यासों का उद्देश्य केवल मनोरंजकता, उपदेशात्मकता, सुधारवादी रहा। यह उपन्यास प्रणय व्यापारों से भरी काहानियों द्वारा पाठक वर्ग का मनोरंजन करने का कर्तव्य कर्म निभा रहे थे। वस्तुतः शैली के स्तर पर ये उपन्यास अपरिपक्व लगते हैं।

प्रेमचंद युग में हिंदी उपन्यासों की कलात्मकता सामाजिक समस्याओं को चित्रित करते समय दिखाई देती है। कथ्य के स्तर इस काल के उपन्यासों में सबसे अधिक बदलाव दिखाई देता है। प्रेमचंद युगीन उपन्यासकारों ने उपन्यास को मनोरंजकता के स्तर से उपर उठाकर समाज के साथ जोडने का सफल प्रयास किया। देश की पराधीनता, जमीनदारों द्वारा शोषण, निर्धनता, अशिक्षा, अंधविश्वास, नारी की स्थिति, सांप्रदायिकता, वेश्याओं की समस्याएँ, दहेज प्रथा, वृद्ध विवाह, बाल विवाह, छुआछूत जैसी सामाजिक

वर्णित किया। उपन्यास मनोरंजकता और काल्पनिकता की दुनिया से बाहर आकर वास्तविकता में रस लेने लगा। इस काल में स्वयं प्रेमचंद ने उपन्यास के कथानक से भी अधिक महत्त्व चरित्र–चित्रण को दिया। उनके अनुसार, "मानव चरित्र पर प्रकाश डालना और उसके रहस्यों को खोलना ही उपन्यास का मूल तत्त्व है।" यह उपन्यास के स्वरूप में आया सबसे बडा परिवर्तन है। इस युग के प्रेमचंद के साथ–साथ जयशंकर प्रसाद, चतुरसेन शास्त्री, पांडेयबेचन शर्मा 'उग्र', भगवतीचरण वर्मा आदि उपन्यासकारों ने उपन्यास में आम बोलचाल की भाषा का प्रयोग किया। पात्रानुकूल और परिवेशानुकूल मुहावरो, कहावतों का प्रयोग करके पात्रों को अधिक प्रभावशाली बनाया। प्रमुखतः प्रेमचंद और उनके समकालीन उपन्यासकारों ने उपन्यास विधा को कौतुहल और काल्पनिक दुनिया से उपर उठाकर जीवन के विविध अंगों से जोडने का प्रयास किया। इन उपन्यासों में विषय वैविध्य व शिल्पगत नवीनता भी दिखाई देती है। उपन्यासों को घटना संयोजन के साथ अनावश्यक विस्तार से भी मुक्ति मिल गई। अतः कथावस्तु, कथ्य, भाषा और शिल्प के स्तर पर इस युग के उपन्यासों में आवश्यकतानुसार परिवर्तन हुआ है।

प्रेमचंद के बाद हिंदी उपन्यास का स्वरूप कई मोड लेता हूआ विकास की ओर बढ रहा था। इस काल के उपन्यासों में परिवेश, कथ्य, संवेदना, भाष तथा शिल्प में बदलाव दिखाई देता है। सन् 1936 के आसपास मार्क्स की विचारधारा ने उपन्यास साहित्य को प्रभावित किया। यशपाल, नागार्जुन आदि ने इस प्रकार के उपन्यासों का समर्थन किया। हिंदी में व्यक्ति–स्वातंत्र्य और अस्तित्व की भावना से व्यक्तिवादी उपन्यासों की धारा प्रवाहित हुई। जैनेंद्र और अज्ञेय उसके वाहक बनें। 1947 ई. में स्वतंत्रता प्राप्ति और देश विभाजन के कारण उत्पन्न हिंसा का तांडव पहली बार उपन्यासों में चित्रित करने का साहस हिंदी उपन्यासकारों ने किया। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि फिर से एक बार सामाजिक को केंद्र में रखकर उपन्यासों का निर्माण होने लगा। आजादी के उपरांत लोक–जीवन, लोक–भाषा, प्रादेशिकता की भावना ने उपन्यासों में जगह बना ली। जिसके कारण 'मैला आँचल' जैसे उपन्यास लिखे जाने लगे। इसी दौरान नारी–जागरण व शिक्षा के कारण नर–नारियों में तनाव की लकीर खिंचती चली गई और नारीवादी उपन्यासों का महत्व हिंदी उपन्यास साहित्य में बढने लगा। "इन उपन्यासकारों ने परंपरागत नारी को आदर्श रूप में ग्रहण कर उसके विभिन्न पक्षों को उद्घाटित करने में, अपनी संपूर्ण सामर्थ्य व्यय कर दी। नारी की पर्दा–प्रथा, उसका अटूट पतिव्रत, उसका विद्यालय में शिक्षा न प्राप्त करना, सती होना, सती न होने की दशा में उसका विधवा का जीवन विधिवत् व्यतीत करना तथा इसी प्रकार के अन्य विधि–निषेधों का प्रतिपादन करना, इन उपन्यासकारों का उद्देश्य हाक गया था।"[1] उपन्यासों में मन के सूक्ष्म भावों और बाल मनोविज्ञान का भी चित्रित किया जाने लगा। प्रेमचंदोत्तर काल में नायक की परिकल्पना बदलाती हुई दिखाई देने लगी है। फणीश्वरनाथ रेणु ने परंपरागत नायक की कल्पाना का विरोध किए बिना मानव की अपेक्षा प्रदेश विशेष को नायक के रूप में सफलतापूर्वक चित्रित किया। इससे यह बात स्पष्ट होती है कि, चित्रित आँचल और उसकी भाषागत, सांस्कृतिक मान्यताओं को अभिव्यक्ति मलने लगी। उपन्यास के सैद्धांतिक स्वरूप में हुए ऐसे बदलाव के कारण प्रेमचंदोत्तर युग चर्चित रहा। अतः प्रेमचंदोत्तर उपन्यासों का यह सबसे बडा बदलाव था। ऐसा माना जाता है कि इस काल में उपन्यास साहित्य का सर्वांगीन विकास हुआ।

प्रेमचंद युगीन उपन्यासों में साठ के दशक में अनेक दृष्टियों से बदलाव दिखाई देने लगा। साठोत्तरी उपन्यासों के स्वरूप हुए परिवर्तन का के मूल कारण थे–राष्ट्रीय और आंतर्राष्ट्रीय स्तर घटित विभिन्न घटनाएँ। नेहरू और इंदिरा गांधी की मृत्यु, स्वतंत्र बंगाल की स्थापना, अणु विस्फोट, महानगरीय परिवेश में उत्पन्न नई समस्याएँ, यंत्रिकता, औद्योगिकता, महँगाई, भ्रष्टाचार, बेरोजगारी, कालाबाजार आदि तत्कलीन घटित घटनाओं ने उपन्यास साहित्य को प्रभावित किया। देश की सम–सामयिक राजनीति, सांस्कृतिक, सामाजिक, आर्थिक परिस्थितियों के अनुरूप उपन्यासकारों अपने आप में बदलाव लाना आवश्यक हो गया। साठोत्तरी मानवी अधिक जटिल बन गया। जिसका चित्रण इन उपन्यासों में वास्तविकता के साथ दिखाई देने लगा। इन घटनाओं के कारन परंपरा से चला आ रहा उपन्यास का स्वरूप काफी मात्रा में परिवर्तीत होता हुआ दिखाई देता है। इन बदली हुए स्थितियों के परिणाम–स्वरूप उपन्यासों में आधुनिकता बोध, परिवर्तीत नर–नारी संबंध, नारी मुक्ति एवं शिक्षा, दलित चेतना, मूल्य विघटन, ग्रामांचल का चित्रण और साप्रदायिकता का चित्रण अधिक स्पष्टता के साथ होने लगा। "विभाजन, मोहभंग, यांत्रिकता, विसंगतियाँ, नैतिक एवं स्थापित मूल्यों का ह्रास...को उचित संगति में सार्थक अभिव्यक्ति देना ही नए उपन्यास का लक्ष्य है।"[2]

आज के उपन्यासों की भाषा कई दिशाओ में परिवर्तीत होती हुई दिखाई देती है। इसमें युगानुरूप उपमान, प्रतीक, मुहावरे, लोकोक्तियों का नए रूप में प्रयोग होने लगा। नगरीय तथा आधुनिक जीवन शैली के प्रभाव स्वरूप अनेक उपन्यासों में अंग्रेजी शब्दावली का प्रयोग मिलता है। ममता कालिया (दौड), दीप्ति खंडेलवाल (कोहरे) जैसे एपन्यास इसके उदाहरण है। वर्तमान उपन्यासों में कथातत्व, चरित्र–चित्रण का महत्त्व कम होता जा रहा है। अधिकांशतः उपन्यासों में आज कथा में सुसंगतता का अभाव दिखाई देता है। विषय वैविध्य के कारण उपन्यास एक बहुत बडे ज्ञान का महासागर बन रहा है जैसे देवेश ठाकुर (काँचघर), धर्मवीर भारती (सूरज का सातवाँ घोडा) आदि। अतः वर्तमान उपन्यासों में कथ्य के अनुरूप भाषा एवं शिल्पगत नूतनता दिखाई देती है। निश्चित ही इन उपन्यासों का स्वरूप नई संवेदना और नए प्रयोगों के अनुरूप बदला हुआ दिखाई देता है।

अंत में कहा जा सकता है कि हिंदी उपन्यास साहित्य में कलागत, कथ्यगत, परिवेशानुकूल परिवर्तन हमेशा होता रहा है। तत्त्वों के स्तर हुए बदलाव ने हिंदी उपन्यास के स्वरूप में काफी हद तक प्रभावित किया हुआ दिखाई देता है। हिंदी उपन्यासों का स्वरूप प्रारंभ से लेकर अंत तक विभिन्न स्तरों पर बदलता रहा है और आगे भी बदलता रहेगा। क्योंकि, "आज का उपन्यासकार अपने युग को आत्मगत सात्य के रूप में ही स्पष्ट करने की चेष्ट करता है।"[3]

संदर्भ ग्रंथः–

1. हिंदी उपन्यास की प्रवृत्तियाँ– डॉ. शशिभूषण सिंहल, पृ. क. 46
2. हिंदी उपन्यास – डॉ. सुरेश सिनहा, पृ. क. 65
3. हिंदी उपन्यास – डॉ. सुरेश सिनहा, पृ. क. 60

30	Indian Ethos in Domestic Violence in Dongraplyad by Shivajirao Thombare **Dr. Dnyandeo Kale**	129
31	The Cultural traits in Gopinath Mohanty's Paraja **Dr. Shivraj Mangnale**	132
32	Depiction of Bhilla Tribal Culture in Arun Joshi's *The Strange Case of Billy Biswas* **Mr. Mannaa Yahya Ali Al-Saeedi & Dr Rajpalsingh Chikhalikar**	134
33	Social and Cultural Ethos of Jarawa Tribe in Pankaj Saksharia's 'The Last Wave' **Dr. Rajpalsingh Chikhalikar & Madhav Waghmare**	137
34	Cultural Challenges of Teaching English in Iran **Fariba Jafari**	141
35	Dusklands (The Vietnam Project) : Search for Order in Chaos **Mohammed Ahmeduddin & Syed Zahir Abbas**	149
36	Economic Development in the Akole Tahsil of Ahmednagar District (Maharashtra), India **Dr. Jalindar Darade**	154
37	Use of Narrative Technique and Language to Reflect the World of Carribean Reality in George Lamming's *In the Castle of My Skin* **Dr. Vikas Raskar**	160
38	Population Characteristics of Rahuri Tahsil **Dr. Jalindar Darade**	166
39	Women Represent the Church **Vishwas Valvi**	177
40	आमजन कि पीडा के ताप को महसुसती कविता **विपिन कुमार शर्मा**	184
41	देवेष ठाकूर लिखित गुरुकुल जीवन मुल्य **प्रा.पोपट जाधव**	190
42	इक्कीसवी सदी का आदिवासी हिंदी नाटक : 'डिडगर ईपिल' **डॉ.शशिकांत सोनवणे**	193
43	जैनेन्द्र कुमार कि कहानी 'खेल' में बाल प्रेम **श्रवण चिहार**	199
44	मध्यमवर्ग तथा निम्न वर्ग कि खायी में धरती धन न अपना **डॉ.अनिल साळुंखे**	202
45	आधुनिक समय में गांधी के राजनीतिक दर्शन कि सार्थकता **कविता**	206
46	वर्तमान युग में हिंदी साहित्य के भक्तीकाव्य कि प्रासंगिकता **डॉ. हुकुमचंद जाधव**	212
47	विज्ञापन क्षेत्र में रोजगार के अवसर **डॉ.उत्तम थोरात**	216
48	'ऊँची उड़ान' नाटक के चरित्र संयोजन में सांस्कृतिक मूल्य-बोध **डॉ.कामायनी सुर्वे**	219
49	विद्यार्थी जीवन में भगवद्गीता की उपयोगिता **राहुल**	226
50	मोहन राकेश के साहित्य में मनोविज्ञान एक अध्ययन **श्री सूर्यकांत आमलपुरे**	229
51	शिवप्रसाद सिंह के उपन्यासो में ग्रामीण जीवन का चित्रण **डॉ.राजेंद्र बाविस्कर**	232
52	धम्मलिपि **डॉ. जितेन्द्र तागडे**	236
53	हिंदी सिनेमा के लोकगीत **प्रा.आश्विनी परांजपे**	240
54	हिंदी नाटक का बदलता स्वरूप **प्रा.शुभांगी खुडे**	243
55	आठवे दशक के हिंदी ऑचलिक उपन्यासो में संस्कृतिक परिवेश **डॉ.अनिल साळुंखे**	247
56	प्राचीनकालीन, मध्यकालीन भारत में स्थानिक शासन **डॉ.पद्माकर दारोंडे**	251
57	सुषम वेदी कृत उपन्यास मोरचे में नारी संघर्ष **अनिता देवी**	255
58	आचार्यत्व कि परंम्परा और केशव का आचार्यत्व **डॉ.मुकेश कुमार**	259
59	हिंदी भाषा ओर भाषिक कौशल **प्रा.दिलीप बच्छाव**	263
60	अब्दुल बिस्मिल्लाह के कथा साहित्य में धार्मिक सहिष्णुता **अनिता रानी**	265
61	वैश्वीकरण के परीप्रेक्ष्य में हिंदी भाषा कि अवधारणा एव स्वरूप **डॉ.एस.डी.पाटील**	269
62	वैश्विक परिदृश्य में हिंदी भाषा प्रचार –प्रसार में डॉ. महेशचंद्र दिवाकरजी : एक दृष्टिक्षेप **डॉ. हाशमबेग मिर्झा, सुदाम पाटील**	272
63	मधुकर सिंह के उपन्यासो में दलित चेतना **डॉ. भारत खिलारे**	275
64	तुलनात्मक दृष्टी से निराला और मुक्तिबोध के काव्य में समानता **डॉ. ओमप्रकाश झवर**	280
65	समकालीन कविता में प्रकृती का आलंकारिक रूप **प्रा. शांताराम डफळ**	284

'RESEARCH JOURNEY' International E- Research Journal
Impact Factor - (SJIF) - 6.261, (CIF) - 3.452(2015), (GIF)-0.676 (2013)
Multidisciplinary Issue
UGC Approved Journal Vol. - V, Issue-I(A)
ISSN : 2348-7143
Jan-Feb-March 2019

हिंदी नाटक का बदलता स्वरूप

प्रा. शुभांगी मनोहर खुडे,
हिंदी विभाग ,
कला, वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय, आष्टी,
ता. आष्टी, जि. बीड।
भ्रमणध्वनि क्र. ९०४९५०२२१६
ई–मेल: shubhangikhude10@gmail.com

भारतीय साहित्य में नाटक विधा अत्यंत प्राचीन और लोकप्रिय रही है। आधुनिक हिंदी नाटक का विकास पाश्चात्य साहित्य की देन है। अत: १९ वीं सदी में हिंदी नाटक का विकास हुआ जो २० वीं और २१ वीं सदी में हिंदी नाटक में कथावस्तु, पात्र, संवाद, परिवेश रंगमंच, भाषा और उद्देश्य के स्तर अनेक परिवर्तन हुए।

हिंदी नाटक साहित्य का विकास इस विकास इस विषय पर चर्चा करते समय पहला प्रश्न यही निर्माण होता है कि हिंदी नाटक का उद्भव कहाँ से स्वीकार करें। अन्य गद्य–पद्य विधाओं की तरह नाटक का उद्भव भी भारतेंदु काल से ही हुआ। इतना निश्चित है क्योंकि डॉ. नगेंद्र भारतेंदु जी को ही पहला नाटककार मानते हैं। ''हिंदी नाटक को साहित्यिक भूमिका प्रदान करने का प्रयास सर्वप्रथम भारतेंदु हरिश्चंद्र ने किया। उनके पूर्व नाटकों का अभाव था। ... भारतेंदु ने स्वयं नाटक लिखे और अपने साहित्यिक सहयोगियों को इस ओर प्रवृत्त करने के साथ ही अव्यावसायिक रंगमंच की नींव भी डाली।''[१] भारतेंदु से पूर्व नाटक नाम से जो रचनज्ञएँ हिंदी में मिलती है, उनमें नाट्यकला के तत्त्वों का अभाव है। वे पद्यात्मक रचनाएँ हैं, नाट्य नहीं। भारतेंदु के पूर्व उनके पिताजी गिरधरदास जी का 'नहुष' और राजा लक्ष्मणसिंह का 'शकुंतला' नाटक मिलता है। यह दोनों नाटक भारतेंदु के पहले लिखे गए हैं फिरभी आज के आधुनिक नाटकों की दृष्टि से अगर विचार करें तो लगता है कि भारतेंदु जी ने ही सच्चे अर्थों में आधुनिक नाटक की शुरूआत की। इसलिए प्रसादपूर्व नाटक को यदि भारतेंदु युगीन नाटक का नाम दिया तो भी गलत नहीं होगा। इस युग के नाटककारों में भारतेंदु जी ने मौलिक और अनूदित दोनों प्राकर के नाटक लिखे, लेकिन अधिकतर सफलता उन्हें मौलिक नाटकों में ही मिली। उनके मौलिक नाटक हैं–भारत दुर्दशा, अंधेर नगरी, वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति, नीलदेवी, भारत जननी, विषस्य विषमौषधम्, श्री चंद्रावली आदि। इन नाटकों द्वारा भारतेंदु जी ने पशुबलि, भारत दुर्दशा, नारी आदर्श, प्रेमा भक्ति, राष्ट्रभक्ति, जनजागरण आदि विषयों को चित्रित किया। लाला श्रीनिवास ने चार नाटक लिखे–तप्ता संवरण, रणधीर प्रेम माहिनी, स्वयंवर और श्री प्रहलाद चरित्र। यह नाटक ऐतिहासिक और पौराणिक कोटि में आते हैं।

बालकृष्ण भट्ट ने अपने नाटकों में सामाजिक कुरीतियों पर व्यंग्य करने के साथ साथ अतीत गौरव–गान को भी अभिव्यक्त किया। उनके नाटक दमयंती स्वयंवर, शिक्षा दान, रेल का बिकट खेल, बाल विवाह आदि है। राधाचरण गोस्वामी ने प्रहसनों में नाम कमाया। तनम न धन गोसाई जी के अर्पण, बूढे मुँह मुँहासे लोग देखे तमासे नामक दो नाटक लिखे। प्रथम नाटक में धर्मगुरूओं की पोल खोल दी हैं तो दूसरे में पर स्त्रीगमन की बुराईयों को उजागर किया हैं। इनके अलावा हिंदी नाटक में कालानुरूप हो रहे बदलाव में जी. पी. श्रीवास्तव का योगदान भी महत्वपूर्ण माना जाता है। उन्होंने उलटफेर, टुमदार आदमी, गडबडझाला, कुर्सी

मैन, न घर का न घाट का जैसे उल्लेखनीय नाटक लिखे। बाद में 'उग्र' 'गोपालराम गहमरी' ने भी नाटक लिखे हुए मिलते हैं। उक्त नाटककारों के नाटकों में निमलिखित विशेषताएँ प्रधान रूप से मिलती है।

१. प्रस्तुत काल में अनूदित और मौलिक नाटक लिखे गए।
२. प्रहसनों के माध्यम से इन नाटककारों ने मनोरंजन, व्यंग्य और सामाजिक बुराईयों का पर्दाफाँस किया।
३. युगीन नाटकों में उपदेशात्मक और सुधारवादी दृष्टिकोण मिलता है।
४. इन नाटकों पर पाश्चात्य् नाट्य शैली का प्रभाव दिखाई देता है।
५. इस युग में सामाजिक, पौराणिक, ऐतिहासिक, प्रहसन, हास्य व्यंग्य पूर्ण और प्रेम प्रधान नाटक लिखे गए।
६. इन नाटकों की गद्यभाषा खडीबोली हिंदी है लेकिन उस पर संस्कृत का प्रभाव दिखाई देता हैं।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि, मौलिक नाटकों का निर्माण इस युग की सबसे बडी उपलब्धि है। रंगमंच की दृष्टि से नाटक लिखने का प्रयास भी इस युग में किया गया। भारतेंदु जी ने अपने नाट्य साहित्य द्वारा हिंदी नाटककारों के सामने आदर्श प्रस्तुत किया और उन्हें नवीन विषयों पर नाटक लिखने की प्रेरणा दी।

भारतेंदु जी ने हिंदी नाट्य साहित्य को जो साहित्यिक भूमिका प्रदान की, उसे कालांतर में जयशंकर प्रसाद ने पल्लवित किया। हिंदी नाट्य साहित्य में प्रसाद जी का आगमन युगांतकारी सिद्ध हुआ। प्रसाद जी के युग तक हिंदी रंगमंच का पूर्ण विकास नहीं हुआ था। फलत: वे ऐसे नाटकों की रचना में प्रवृत्त हुए जो पाठ्य अधिक है, अभिनेय कम।

प्रसाद जी ऐतिहासिक नाटकों की रचना करने वाले हिंदी के प्रमुख नाटककार माने जाते हैं। उनके द्वारा रचित नाटक इसप्रकार हैं–विशाख(१९२१), अजातशत्रु(१९२२) कामना(१९२४), जनमेजय का नागयज्ञ(१९२६), स्कंदगुप्त(१९२८), एक घूँट(१९३० एकांकी), चंद्रगुप्त(१९३१) और ध्रुवस्वामिनी (१९३३) आदि। प्रसाद जी ने अपने नाटकों द्वारा भारत के अतीत गौरव का चित्रण करने के साथ साथ राष्ट्रीयता की भावना को भी जाग्रत करने का प्रयास किया। उन्होंने अपने नाटकों के विषय मौर्यकाल, बौद्धकाल एवं गुप्ताकल से चुने हैं जों भारतीय इतिहास का स्वर्णयुग माना जाता है। प्रसाद जी ने अतीत के पट पर वर्तमान का चित्रण किया तथा इतिहास और कल्पना का संतुलित समन्वय करने में उन्हें सफलता प्राप्त हुई। ध्रुवस्वामिनी में तलाक (विवाह मुक्ति) एवं पुनर्विवाह का अधिकार हिंदू स्त्री को है या नहीं इस समस्या को बडे कौशल से उन्होंने प्रस्तुत किया। प्रसाद के नाटक न तो सुखांत है न दुखांत अपितु वे प्रसादांत है। क्योंकि नायक अंतिम फल का भोक्ता नहीं बन सकता और विषाद की एक हलकी छाया पाठकों के मन पर छूट जाती है। उदा. स्कंदगुप्त अपने मार्ग में आनेवाली विभिन्न विघ्न बाधाओं पर विजय प्राप्त करने पर भी अंत में उसे देवसेना नहीं मिलती। प्रसाद जी प्रयोगधीं नाटककार थे। उन्होंने अपने अंतिम नाटकों में विषय और शिल्प दोनों भी दृष्टियों से प्रयोग किए और अंत में ध्रुवस्वामिनी के रूप में ऐसा सशक्त नाटक लिखा जो पूरी तरह अभिनीत किए जाने योग्य है। एकघूंट उनकी सफल एकांकी है, तो करूणालय गीति नाट्य के अंतर्गत रखा जा सकता है। संक्षेप में कहा जा सकता है कि हिंदी की ऐतिहासिक नाट्य परंपरा में प्रसाद जी श्रेष्ठतम् नाटककार है। "उनकी प्रवृत्ति रोमानी अवश्य थी, पर उनमें सामाजिक जागरूकता का अभाव नहीं था।"[२]

हरिकृष्ण प्रेमी ने मध्यकालीन इतिहास से विषय वस्तु का चयन करते हुए भव्य ऐतिहासिक नाटकों की रचना की। जैसे–रक्षाबंधन, शिवसाधना, प्रतिशोध, स्वप्नभंग, आहुति, आमृतपुत्री आदि। लक्ष्मीनारायण मिश्र जी समस्या प्रधान नाटकों के लिए प्रसिद्ध हैं। उन्होंने संन्यासर नाटक में विदेशी शासकों की छलकपट पूर्ण वृत्ति, असहयोग आंदोलन एवं रौलेट एक्ट को विषय वस्तु के रूप में चुना। उन्होंने सामाजिक समस्याओं में नारी समस्याओं को अपने नाटकों में अधिक मात्रा में चित्रित किया। प्रेम विवाह काम और नैतिकता, दांपत्य जीवन एवं प्रणय जैसी अनेक समस्याओं पर उन्होंने नाटक लिखे। उनके प्रमुख नाटक हैं–सिंदूर की होली(विधवा विवाह एवं नारी उद्धार), आधीरात, राक्षस का मंदिर, मुक्ति का रहस्य आदि। उपेंद्रनाथ अश्क के नाटकों में नारी मनोवृत्ति का यथार्थ निरूपण हुआ है। उन्होंने स्वर्ग की झलक, छठा बेटा, अलग अलग रास्तें, अंजों दीदी, कैद, उडान और जय पराजय आदि नाटक लिखें। सेठ गोविंददास जी ने आदर्शवादी नाटकों की रचना की है। उनके नाटकों में प्रमुख हैं–प्रकाश, संवापथ, संतोष कहाँ, बडा पापी कौन, सुख किसमें, गरिबी या अमिरी आदि। इन नाटकों में सेठ जी ने समकालीन समस्याओं जैसे– छुआछूत, भ्रष्टचार, पाखंड, नेताओं की स्वार्थी वृत्ति आदि का चित्रण किया । उनके नाटक रंगमंच के अनुकूल है। इन नाटककारों के अतिरिक्त गोविंदवल्लभ पंत, ने अपने नाटकों में राजनीति और शराब के दुर्गुणों की चर्चा अंगूर की बेटी, सिंदूर की होली में की हैं। वृदावनलाल वर्मा, किशोरीदास वाजपेयी, वियोगी हरि, चतुरसेन शास्त्री आदि नाटककारों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

१. प्रसाद युग में समाज सुधार की प्रवृत्ति को आधार बनाकर नाटक लिखे गए।
२. बाल विवाह, अनमेल विावह छुआछूत, वर्ण व्यवस्था, नारी स्वातंत्रता, धार्मिक अंधविश्वास जैसी अनेक समस्याओं प्रस्तुत युग में अभिव्यक्ति मिली।
३. प्रसाद युग में ऐतिहासिक और पौराणिक नाटकों का निर्माण सबसे अधिक हुआ है।
४. प्रसाद युग में नाटकों द्वारा भारत के अतीत गौरव का चित्रण करने के साथ साथ राष्ट्रीयता की भावना को भी जाग्रत करने का प्रयास हुआ है।
५. प्रसाद जी ने अतीत के पट पर वर्तमान का चित्रण किया तथा इतिहास और कल्पना का संतुलित समन्वय करने में उन्हें सफलता प्राप्त हुई।
६. प्रसादयुगीन नाटकों में प्राचीन कथानकों को आधुनिक और वर्तमान संदर्भ दिए गए।
७. इस काल में समस्यामूलक नाटकों की रचना पर्याप्त मात्रा में हुई हैं।
८. प्रस्तुत युगीन नाटकों का विषय भरतीय ढंग है लेकिन शिल्प पश्चिमी प्रभाव दिखाई देता है। संक्षेप में कहा जा सकता है कि प्रसाद युग हिंदी नाटकों को प्रौढता की ओर ले जाने वाला काल सिद्ध हुआ।

प्रसादोत्तर नाटकों का समय १९५० ई. से माना जा सकता है। इस काल में रचित नाटक जीवन के यथार्थ अधिक जुडे हुए हैं। तथा उनमें रंगमंचीयता एवं अभिनेयता का विशेष ध्यान रखा गया है। देश में स्वतंत्रता के बाद एक नई चेतना का विकास हुआ। सर्वत्र स्वार्थपरता, छलकपट, भ्रष्टाचार, अवसरवादिता का बोलबाला हो गया। युवा पीढी दिशाहीन हुई। बढती हुई बेरोजगारी ने तनाव, संघर्ष एवं अपराधिक प्रवृत्तियों को जन्म दिया। महानगरीय जीवन में यांत्रिकता और औद्योगीकरण के कारण जीवन व जगत में अनेक नई समस्याओं ने अपना झाल फैलाया। प्रसादोत्तोर नाटकों में ''आदर्श और भवना की अपेक्षा यथार्थ और बौद्धिकता को महत्त्व दिया जाने लगा। फलस्वरूप हिंदी नाट्य साहित्य में समस्या प्रधान नाटकों का आविर्भाव

हो गया।''[3] नवीन परिवेश, नवीन भावबोध एवं नवीन मान्यताओं ने नाटकों की विषय–वस्तु को भी बदल दिया।

प्रसादोत्तर प्रमुख नाटककारों में विष्णु प्रभाकर का स्थान अद्‌वितीय है। उन्होंने अपने नाटकों में आधुनिक भावबोध से उत्पन्न तनाव एवं जीवन संघर्ष को सफलतापूर्वक प्रस्तुत किया। इनके प्रमुख नाटक हैं–डॉक्टर, युगे युगे क्रांति और टूटते परिवेश। जगदीशचंद्र माथुर ने हिंदी रंगमंच को नई दिशा देने का काम किया। कोणार्क, शारदीय, पहला राजा, दशरथनंदन उनके प्रसिद्‌ध नाटक है। कोणार्क नाटक की कथावस्तु भुवनेश्वर(उडीसा) के कोणार्क मंदिर सं जुडी है। शारदीय उनका ऐतिहासिक नाटक है जो मराठों और निजाम के बिच हुए युद्‌धकी पृष्ठभूमि पर लिखा गया है। पहला राज पौराणिक पृष्ठभूमि से युक्त होने पर भी समसामयिक युगीन संदर्भो से जुडा हुआ है। और दशरथनंदन रामकथा पर आधारित है। मोहन राकेश आधुनिक काल के सशक्त नाटककार है। उन्होंने आषाढ का एक दिन, लहरों के राजहंस और आधे–अधूरे नामक तीन नाटक लिखे। आषाढ का एक दिन महाकवि कालिदास के परिवेश, रचना प्रक्रिया, प्रेरणा स्रोत और उनकी गलती से संबंधित कथा को अभिव्यक्त करता है। लहरों के राजहंस में नंद और सुंदरी की कथा महात्मा बुद्‌ध के परिप्रेक्ष्य में चित्रित की है। आधे–अधूरे मध्यमवर्गीय जीवन की विडंबना को प्रस्तुत करनेवाल नाटक है। लक्ष्मीनारायण लाला एक बहुचर्चित नाटककार है। अंधा कुआं, दर्पण, मादा कैक्टस, सूर्यमुख, मिस्टर अभिमन्यु, कर्फ्यू, अब्दुल्ला दीवाना, व्यक्तिगत, एक सत्य हरिश्चंद्र, सगुन पंछी, सबरंग मोह भंग उनकी प्रसिद्‌ध नाट्यकृतियाँ हैं। लाल के नाटकों में भैतिकवादी अंधी दौड और मानवीय जीवन की विसंगतियों का यथार्थ चित्रण हुआ है। धर्मवीर भारती कृत अंधा युग आधुनिक भावबोध को प्रस्तुत करनेवाला गीति–नाट्य है। व्यक्ति को बाह्य संघर्ष ही नहीं आंतरिक संघर्ष भी झेलने पडते हैं। और ये आंतरिक संघर्ष अधिक भयावह होते हैं। इन नाटककारों के अलावा प्रसादोत्तर नाटककारों में सुरेंद्र वर्मा ने सेतुबंध, द्रोपदी, नायक खलनायक, विदूषक, आठवां सर्ग शंकर शेष ने बिन बाती के दीप, फंदी, बंधन रमेश बक्षी देवयानी का कहना है, तीसरा हाथी गिरिराज किशोर ने प्रजा ही रहने दो, नरमेध भीष्म सहानी ने कबिरा खडा बाजार में जैसे नाटक लिखे। अत: इन नाटकारों ने ''समाज और समुदाय को अपने नाटकों से जोडकर उस समय की आर्थिक, राजनैतिक, साहित्यिक, सामाजिक आदि गतिविधियों से मानवों को परिचित कराया।[4]

१. इस काल में नाटकों की विषय वस्तु का चयन इतिहास–पुराण के साथ साथ समसामयिक जीवन से किया गया।
२. इस युग में नाटक मानवीय जीवन की विसंगतियों को प्रस्तुत करने वाला सशक्त माध्यम बना है।

निष्कर्षत:

कहा जा सकता है कि अन्य गद्य विधाओं की अपेक्षा हिंदी नाटक का विकास मंद गति से हुआ क्योंकि हिंदी नाटक को आज भी दर्शकों की कमी है। हिंदी नाटक समसामयिक समस्याओं को को प्रस्तुत करने वाली महत्वपूर्ण विधा है। और हिंदी नाटकों की यह विकास यात्रा अभी भी जारी है।

संदर्भ ग्रंथ:–

१. हिंदी साहित्य का इतिहास– डॉ. नगेंद्र, पृ. क्र. ५६५,
२. हिंदी साहित्य का इतिहास– डॉ. नगेंद्र, पृ. क्र. ५६६,
३. समकालीन हिंदी परिदृश्य– डॉ. परवीन अख्तर, पृ. क्र. ४५,
४. सत्तरोत्तरी हिंदी नाटकों में चित्रित यथार्थ–डॉ. गोरखनाथ माने, पृ.क्र. ९७,

UGC Approved Jr.No.43053

आंतरराष्ट्रीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

प्रिंटिंग एरिया

Printing Area International Interdisciplinary Research Journal in Marathi, Hindi & English Languages

May 2018, Issue-41, Vol-06

Editor
Dr. Bapu g. Gholap
(M.A.Mar.& Pol.Sci.,B.Ed.Ph.D.NET.)

Co-Editor
Dr. Ravindranath Kewat
(M.A. Ph.D.)

"Printed by: **Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.** Published by **Ghodke Archana Rajendra** & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post. Limbaganesh Dist,Beed -431122 (Maharashtra) and Editor **Dr. Gholap Bapu Ganpat.**

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205

Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed
Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295
harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com
All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com

40) बालश्रम—एक ज्वलंत समस्या
डॉ. अनिता कुर्रे || 163

41) विज्ञापन और मानव जीवन का अंत: संबंध
प्रा. शुभांगी मनोहर खुडे || 166

42) महाराष्ट्र के अपराधी व्यवहार का मनोवैज्ञानिक अध्ययन
प्रा. व्ही. एन. रामटेके || 168

43) राजस्थान राज्य में स्वयंसेवी संस्थाओं द्वारा जनजाति वर्ग के ....
दीपक कुमार योगी || 172

44) भारतीय परिवार व्यवस्था : परम्परा से आधुनिकता की ओर
डा. अर्चना सिंह || 178

45) सूरसाहित्य में ब्रज की आर्थिक स्थिति, व्यवसाय एवं कृषि कर्म
डॉ. सरला चौधरी || 182

International Multilingual Research Journal

Printing Area

9850203295 7588057695

Editor Dr.Bapu G.Gholap

https://sites.google.com/site/vidyawartajournal

ISSN: 2394 5303 | Impact Factor 5.011(2018) | Printing Area International Research Journal | May 2018 Issue-41, Vol-06 | 0166

41

विज्ञापन और मानव जीवन का अंत: संबंध

प्रा.—शुभांगी—मनोहर खुडे,
हिंदी विभाग,
कला, वसणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय, आष्टी,
ता. आष्टी, जि. बीड

'विज्ञापन' शब्द 'वि' और 'ज्ञापन' से मिलकर बना है। 'वि' का अभिप्राय 'विशिष्ट' तथा 'ज्ञापन' का अभिप्राय सूचना से संबंधित है। अत: विज्ञापन का अर्थ विशिष्ट सूचना से है। सरल शब्दों में कहें तो विज्ञापन का अर्थ बताना या सूचना देना होता है। विज्ञापन का सामान्य अर्थ विशेष जानकारी है। किसी भी महत्वपूर्ण सूचना को जन—मानस तक पहुँचाने उसको प्रसारित प्रचारित करने की जिम्मेदारी विज्ञापन निभाता है। विज्ञापन के लिए अंग्रेजी में एडवरटाइजिंग सर्वाधिक उपयुक्त शब्द है। इसकी उत्पत्ति लैटिन शब्द से मानी जाती है जिसका अर्थ है किसी ओर मुडना या परिवर्तन। स्पष्ट शब्दों में कहे तो लोगों को अपनी ओर आकर्षित करना विज्ञापन कहलाता है। "किसी व्यक्ति, सेवा या आंदोलन को प्रस्तुत करने वाली मुद्रित सामग्री, लिखित शब्द, बोले गए शब्द या चित्रांकन विज्ञापनदाता, अपने खर्चेपर, बिक्री, प्रयोग, वोट या अन्य प्रकार की सहमति प्राप्ति के लिए खुल्लमखुल्ला प्रस्तुत करता है।"

विज्ञापन वस्तु परिचय, विशेषताएँ और वस्तु से होने वाले लाभ से ग्राहकों को आवगत कराने और उन्हें आकर्षित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। विज्ञापन एक उत्पादक, विक्रेता और उपभोक्ता तीनों के बिच सेतु का काम करता है। इसलिए विज्ञापन एक संपूर्ण कला है। वास्तव में विज्ञापन वह सूचना, संवाद है, जिसमें उत्पादन की संपूर्ण जानकारी उसकी श्रेष्ठता और विश्वसनीयता के साथ दी जाती है।

विज्ञापन एक कला है। जीवन में मनुष्य जीवनावश्यक वस्तुओं को विज्ञापन के विश्वास पर खरिदता है। इतना ही नहीं हमारे लिए आवश्यक वस्तुओं की पहचान हम से अधिक विज्ञापनकर्ताओं को होती है। हमारा पूरा जीवन विज्ञापनों के बिच एक बिंदु के समान है। विज्ञापन ज्ञान और शिक्षा का स्रोत है। उसका मूल उद्देश्य विचारों का प्रचार—प्रसार तथा सामान्य का विश्वास जीतना रहा है। विज्ञापन सामान्यत: किसी वस्तु, विधा या सेवा से उपभोक्ताओं को परिचित करवाता है, उनमें खरिदने की इच्छा जगाता है। कई उपलब्ध वस्तुओं में से एक का चयन करने में सहायता करता है किसी वस्तु के ब्रांडविशेष के प्रति उनकी प्रतिबद्धता बढाता है। कभी कभी ऐसा लगता है कि विज्ञापन हमारे जीवन में सहायक की भूमिका तो निभा रहा है किंतु कुछ मामलों में वह ग्राहकों या उपभोक्ताओं को आदेश देने लगता है। यानी मस्तिष्क पर इतना गहरा प्रभाव पडता है कि किसी ब्रांड की हमें आदत पड जाती है। विज्ञापन में आज नारी का स्थान महत्त्वपूर्ण बन गया है। बिना नारी के विज्ञापन लगभग नहीं के बराबर होते हैं । सुंदर लडकियों का मॉडल के रूप में इस्तेमाल करके विज्ञापन आकर्षक और लुभावना बनाया जाता है। वैसे देखा जाए तो कुछ विज्ञापनों में इन मॉडल लडकियों के कपडे भी ढंग के नहीं होते हैं। विज्ञापन द्वारा बेची जाने वाली कुछ वस्तुओं का नारियों से किसी भी प्रकार का संबंध नहीं होता हैं फिरभी इन वस्तुओं के विज्ञापन में स्त्री की भूमिका होती है। जैसे पुरूष की बनियान, फैशनेबल कपडे सूट—सफारी पहने मॉडल पुरूष के साथ आकर्षक या विशिष्ट प्रकार से स्त्री को खडा किया जाना, स्लोगन का उच्चरण स्त्री के द्वारा करवाना, पुरूष द्वारा इस्तेमाल की जाने वाली वस्तुओं की विशेषताओं नारी द्वारा बतलाना जैसे आदि। अत: "विज्ञापन ने एक ऐसी व्यावसायिक संस्था का रूप ले लिया है जो जनमानस को एक ओर ज्ञान और शिक्षा प्रदान करता करता है, उनके सामान्य ज्ञान को बढ़ाता है

और दूसरी ओर विज्ञापन दाता के लिए आर्थिक लाभ हेतु नए बाजार तलाशता है, उसके उत्पादों के प्रति लोगों को आसक्त करता है।" फिरभी विज्ञापन

का माध्यम भले ही कुछ भी क्यों न हो वह जनता के हितों, विश्वास व मान्यताओं की अनदेखी करने वाला न हो। विज्ञापन कर्ता को विज्ञापन के संबंध में इस बात को ध्यान में रखना चाहिए कि विज्ञापन मर्यादा विहीन एवं संस्कृति विरूद्ध नहीं होने चाहिए। वर्तमान में निरंतर वस्तुओं का उत्पाद बढता हुआ नजर आता है। उपभोक्ता के सामने उत्पादों को प्रस्तुत करने की एक स्पर्धा उत्पादकर्ताओं में होती है। जिसका माध्यम विज्ञापन है। जो दूरर्दन, प्रिंट मिडिया, अखबार, पत्रिकाओं, आकाशवाणी, सिनेमा, होर्डिंग, पोस्टर आदि के द्वारा प्रभावात्मक रूप में लोगों के जीवन को प्रभावित करने का काम कर रहे हैं। विज्ञापन की व्यापकता आज इतनी बढी है कि, वस्तुओं के साथ साथ विचारों, किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व को, उसके भूत और भविष्य को भी विज्ञापित करने का प्रयास आज हो रहा है। विविध राजनैतिक पार्टियाँ अपनी पक्षीय विचारधारा को विज्ञापन के माध्यम से लोगों तक पहुँचाने का कर्तव्य भी निभा रही है। जनता को विश्वास दिलाने के और सत्ता प्राप्त करने के लिए विज्ञापन राजनैतिक—सहायक की भूमिका को अदा कर रहा है। विज्ञापन आज मानव के प्रगति का मार्ग माना जाता है। मानवीय विभिन्न आवश्यकताओं की पूर्ति का माध्यम विज्ञापन है। बिना विज्ञापन के मानव—जीवन गतिहीन—सा महसूस होता है। अत: हमारे जीवन का बहुत अधिक समय विज्ञापन के इर्द गिर्द बित जाता है। ''विज्ञापन का प्रभाव लोगों की जीवन—शैली, उनके आचार—व्यवहार, खाप—पान, सोच विचार, आस्थाओं—अनास्थाओं तथा उनके संपूर्ण व्यक्तित्व के विकास को प्रभावित करता है। आज विज्ञापन का ही प्रभाव है कि समाज के विभिन्न क्षेत्रों में जागरुति और नयेपन का सूत्रपात हुआ है।'' मानव जीवन का कोई भी पहलू विज्ञापन के प्रभाव से अछूता नहीं है, वास्तव में विज्ञापन किसी वस्तु अथवा विचार एवं सेवा की बिक्री का सर्वोत्तम साधन है।विज्ञापन बहुत कम समय और कम शब्द रचनाओं के माध्यम से बहुत जल्दी लोगों को आकर्षित करने का एक साधन है। कभी कभी निकृष्ट दर्जे उत्पाद को विज्ञापन की प्रभावी प्रस्तुती के कारण अधिक प्रसिद्धि मिलती है। तो कभी विज्ञापन की साधारण प्रस्तुतीकरण के कारण उच्च दर्जे के उत्पाद की बिक्री कम होती है। इसलिए विज्ञापन का प्रभावशाली, आकर्षक, कम शब्दों अधिक जानकारी देनेवाला होना चाहिए। ''आज समाज की भौतिक प्रगति और औद्योगिक क्रांति के कारण उत्पादन तंत्र में परिवर्तन नजर आ रहा है। ''निरंतर बढती नई नई वस्तुएँ व उत्पाद इनके पक्षों को नवीनता के साथ प्रस्तुत करते विज्ञापन ऐसे मायाजाल का निर्माण करते है कि दर्शक उसमें उलझता ही जाता है, वर्तमान परिप्रेक्ष्य में परिवर्तन में व्यक्ति की जरूरतें और आकांक्षाओं में परिवर्तन हो रहा है। दूरर्दन विज्ञापन और मोहक तरीके से प्रस्तुत करके उपभोक्ता के दिल उसके प्रति रूचि पैदा कर देता है। भले ही आवश्यकता हो या नहीं किंतु दूरदर्न के रंगीन मायाजाल का आकर्षण विज्ञापन में प्रचारित उत्पादन को दर्शक के मन मस्तिक में प्रविष्ट करा दिता है।'' विज्ञापन की भाषा साहित्यिक भाषा से अलग होती है। उसमें लोगों को आकर्षित करने का सामर्थ्य, विश्वसनीयता और स्पष्टता होनी चाहिए। वह सहज, सरल, बोलचाल की प्रचलित भाषा होनी चाहिए। भाषा की जटिलता का बुरा प्रभाव विज्ञापन की संप्रेषण पर होता है। विज्ञापन में स्थान, रंग, चित्र, भाषा—शैली आदि का ध्यानपूर्वक एवं उत्पाद की विश्वसनीयता में अद्वितीय महत्व होता है। उत्पाद के अनुकूल परिवेश प्रभावोत्पादक भाषा का प्रयोग विज्ञापन में जान डालता है। प्रभावकारी शब्दों का प्रयोग लोगों के हृदय में परिवर्तन लाकर सुधार की क्षमता रखते हैं।

अत: विज्ञापन का निर्माण वस्तु या सेवा भी सच्ची जानकारी देकर उपभोक्ताओं को आकर्षित करना, उनमें वस्तु या सेवा में रूचि उत्पन्न करना, माँग बढाना आदि को सामने रखकर किया जाता है। उत्पादित वस्तुओं को उपभेगक्ता तक पहुँचाना, उत्पाद की सर्वांगीन जानकारी देना, किसी उत्पाद अथवा सेवा को बेचने, प्रवर्तित करने के प्रमुख उद्देश्य किया जानेवाला जनसंचार विज्ञापन है। विज्ञापन विक्रय कला का एक नियंत्रित जनसंचारमाध्यम है जिसके द्वारा उपभोक्ताको दृश्य एवं श्राव्य सूचना इस उद्देश्य से प्रदान की जाती है कि वह विज्ञापनकर्ता की इच्छा से विचार

सहमती से कार्य अथवा व्यवहार करने लगे। साथ में विज्ञापन की विश्वसनीयता पर भी आज कल कुछ प्रश्न उठने लगे है। जिनको नजरांदाज भी नहीं किया जा सकता।

संदर्भ ग्रंथ:—

१. जनसंचार जनसंपर्क एवं विज्ञापन: डॉ. सुजाता वर्मा, जी. पी. वर्मा,

२. पत्रकारिता नियम, समस्य एवं समाधान: प्रियंका वाधवा, राकेश नैम,

३. मिडिया लेखन सिद्धांत और व्यवहार: डॉ. चंद्रकांतप्रकाश मिश्र

४. मिडिया लेखन एवं संपादन कला: विजयकुमार आनंद

❑❑❑

42

महाराष्ट्र के अपराधी व्यवहार का मनोवैज्ञानिक अध्ययन

प्रा. व्ही. एन. रामटेके
(मानसशास्त्र विभाग)
सरदार वल्लभभाई पटेल कला व विज्ञान महाविद्यालय ऐनपूर

प्रस्तावना :—

व्यक्ती के विचलित व्यवहार मी से अपराधी व्यवहार यह आज कि महत्वपूर्ण सामाजिक समस्या वनी हुई हैद्य अपराधी व्यवहारके प्रमाण दिन व दिन चढ़ते जा रहे हैद्य इसलिए अपराधी व्यवहार का मनोवैज्ञानिक दृष्टीकोन से अध्ययन करने के लिए अपराधी मनोविज्ञान यह विशेष शाखा निर्माण हुई हैद्य

अपराधी के स्वरूप और परिभाषा

अपराधी व्यवहार का मनोवैज्ञानिक दृष्टीकोन से अध्ययन करनेवाले शास्त्र ही अपराधी मनोविज्ञान है

अपराधी कि परिभाषा

Paul Tappan के अनुसार " विधीमान्य बाबीयो के अलावा सहेतुक अपराधी विधी का उल्लंघन करके सजा के लिए पात्र ठरनेवली व्यक्ती कि कृती हि अपराधी है

सामाजिक नियमो का उल्लंघन करनेवाले व्यक्ती का समाज विघातक कृत्य हि अपराध है

संशोधन का हेतू उद्देश

अपराधीव्यवहार का अध्ययन करना

अपराधी व्यवहार कि कारण मीमांसा करना

अपराधी व्यवहार पर नियंत्रण रखना

अपराधी व्यवहार पर प्रतिबंध करना

अपराधी व्यवहार के अध्ययन करते समय विधीविषयक समाजशास्त्रीय अर्थशास्त्रीय, और मनोवैज्ञानिक दृष्टीकोन का उपयोग किया जाता हैद्य

MAH/MUL/ 03051/2012 ISSN :2319 9318

आंतरविद्याशाखीय बहुभाषिक संशोधन पत्रिका

विद्यावार्ता

April To June 2018
Issue-22, Vol-13

Editor
Dr. Bapu g. Gholap
(M.A.Mar.& Pol.Sci.,B.Ed.Ph.D.NET.)

विद्येविना मति गेली, मतीविना नीति गेली
नीतिविना गति गेली, गतिविना वित्त गेले
वित्तविना शूद्र खचले, इतके अनर्थ एका अविद्येने केले

-महात्मा ज्योतीराव फुले

❖ विद्यावार्ता या आंतरविद्याशाखीय बहूभाषिक त्रैमासिकात व्यक्त झालेल्या मतांशी मालक, प्रकाशक, मुद्रक, संपादक सहमत असतीलच असे नाही. न्यायक्षेत्र:बीड

"Printed by: **Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.** Published by **Ghodke Archana Rajendra** & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post. Limbaganesh Dist,Beed -431122 (Maharashtra) and Editor **Dr. Gholap Bapu Ganpat.**

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205
Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed
Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295
harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com
All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com

34

धूमिल रचित काव्य में आम आदमी

प्रा. शुभांगी मनोहर खुडे
हिंदी विभाग,
कला, वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय,
ता. आष्टी, जि. बीड

हिंदी में धूमिल नाम से जाने जानेवाले कवि का असली नाम सुदामा पांडेय है। 'संसद से सडक तक', 'सुदामा पांडे का प्रजातंत्र' और 'कल सुनना मुझे' नामक काव्य संग्रह में उनका पूरा काव्य प्रकाशित है। उनके काव्य का विषय तत्कालीन लोकतंत्र और आम आदमी की दयनीय स्थिति का वास्तविक चित्रण है। कवि ने प्रकशति, प्रेम, सौंदर्य के सपनों की अपेक्षा आम आदमी की रोजमर्रा की जिंदगी को अपने काव्य में स्थान दिया।

आजादी के पश्चात् आम जनता के सपने काँच की भांति टूट गए। उनको न्याय नहीं मिला। ऐसी आवस्था में धूमिल जैसे सशक्त कवि ने शासन और शासकों के विरोध में आवाज उठाने का साहस किया। वे आम जनता को अपने अधिकारों के प्रति जाग्रत करने लगे। क्योंकि अंग्रेजों ने जिस प्रकार आम जनता का शोषण किया था, उसी तरीके से स्वतंत्रता के बाद भी शोषण होता रहा। हमारे तत्कालीन शासक संप्रदायिकता, भाषा, धर्म, जात के नाम पर जनता को आपस में लडवाकर अपना राजनैतिक स्वार्थसिद्धी में लगे थे। धूमिल सरकार की ऐसी घिनौनी वृत्ति का नकाब उतारते हुए राजनेताओं की असलियत, अवसरवादिता से लोगों को परिचित कराते हैं। आम आदमी केवल दो वक्त की रोटी के लिए रात दिन मेहनत करता है। वहाँ अमीर राजनेताओं से मिलकर रोटी और आम आदमी की भूख से किस प्रकार खिडवाड करता है, इसका श्रेष्ठ उदाहरण निम्न पंक्तियाँ हैं,

"एक आदमी रोटी बेलता है,
एक आदमी रोटी खाता है।
एक तीसरा आदमी भी है
जो न रोटी बेलता है न रोटी खाता है।
वह सिर्फ रोटी से खेलता है
मैं पूछता हूँ
वह तीसरा आदमी कौन है
और मेरे देश की संसद मौन है।"

आजादी के बरसों बाद भी गरीब को अपने मूल अधिकारों से दूर रखा गया है। भ्रष्ट्राचार, रिश्वतखोरी, बलात्कार, अन्याय–अत्याचार शोषण ने देश को खोखला बना दिया है। आम आदमी की आवाज दबाई जा रही है। देश के धन संपन्न लोगों ने राजनेताओं के साथ मिलकर संविधान में अपने मन मुताबिक बदलाव करवाए। जिसके कारण आज जनता को न्याय के लिए तरसना पड रहा है। ऐसी स्थिति में उनके मन में देश के प्रति नैराश्य उत्पन्न होना आम बात है। वे आम जनता को शासक वर्ग की अव्यवस्था के प्रति जाग्रत करते है। अत:, "धूमिल उस पूँजीवादी एवं सामंतवादी व्यवस्था के विरोध में है, जो स्वाधीनता के बाद भी आम जनता को उसके अधिकार से वंचित किए है, लेकिन गरीब इस व्यवस्था की चालाकी को समझ नहीं पाता।" इसलिए कवि धूमिल भ्रष्ट व्यवस्था के विरोध में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहते हैं,

जहाँ रात में
संविधान की धाराएँ
नाराज आदमी की परछाई को
देश के नक्शे में
बदल देती है।

धूमिल जनवादी चेतना के सर्वाधिक चर्चित कवि है। साधारण जन–जीवन की सच्चाई को उसके पूरे उद्वेग, उसकी संपूर्ण नग्नता और तल्खी के साथ प्रस्तुत कर देने में निहित है। संसद से सडक उनका पहला काव्य संकलन है। जिसमें लगभग सभी बहुचर्चित कविताएँ शामिल है। यह संकलन धूमिल काव्य की मूल्यवत्ता और कमजोरियाँ दोनों का अच्छा प्रतिनिधित्व

करता है। उनकी कविताओं में सामाजिक शक्तियों का टकराव साफ नजर आता है। कवि धूमिल जनवादी चेतना के कवि है। स्वतंत्रता के बाद देश की शासन व्यवस्था में कोई परिवर्तन नहीं दिखा तब उन्होंने मोहभंग को कविता विषय बनाया। राजनीतिक विसंगतियों को व्यक्त करते हुए उन्होंने विकृतियों को व्यक्त किया है।

बीस साल बाद
मैं अपने आपसे एक सवाल करता हूँ
जानवर बनने के लिए कितने सब्र की जरूरत है?
अपने आप से सवाल करता हूँ
क्या आजादी सिर्फ तीन थके हुए रंगों का नाम है
जिन्हें एक पहिया ढोता है।
या इसका कोई खास मतलब होता है?

जनवादी चेतना से प्ररित धूमिल के मतानुसार आम लोगों के विकास के लिए पीडित, दलित, मनुष्य को उठकर खडा होना होगा। समाजवाद के विरोधियों का डटकर विरोध करना आज बहुज जरूरी है। समाजवाद के खोखले आदर्श की तुलना वे आग बुझाने वाली बालू की बाल्टियों से करते हुए कहते हैं,

मगर मैं जानता हूँ कि मेरे देश का समाजवाद
मालगोदाम में लटकती हुई
उन बाल्टियों की तरह है, जिनपर 'आग' लिखा है
और उनमें बालू और पानी भरा है

पटकथा में संसदीय लोकतंत्र, चुनावी राजनीति, आम आदमी की विवशता और मध्यवर्ग के आपराधिक चरित्र को वास्तविकता के साथ धूमिल ने अभिव्यक्ति दी है। स्वातंत्र्योत्तर काल में भ्रष्ट्राचारों का व्यापक चित्रण करने का साहस केवल पटकथा जैसी कशति में ही हो सकता है। नेहरू की प्रशंसा और उनके द्वारा आम आदमी के मोहभंग की स्थिति की सशक्त पटकथा लिखने का काम धूमिल ने किया। आजादी के बारे में आम जनता के मन में उत्सुकता के साथ साथ अनेक सपने थे। लेकिन असल में उनके सपनों को पूरा करने में तत्कालीन सरकार असफल हुई या सपनें पूरे करने का कोई प्रयास ही नहीं हुआ? आजादी के पहले लोगों को राजनेताओं पर विश्वास था कि,

"अब कोई बच्चा
भूखा रहकर स्कूल नहीं जाएगा
अब कोई छत बारिश में
नहीं टपकेगी।"

लेकिन आजादी के बाद ऐसा कुछ नहीं हुआ। इतना ही नहीं आजादी के पूर्व जो लोगों की समस्याए थी वहीं बाद में भी विद्यमान थी। या मानों उससे अधिक बुरी तरह से समस्याओं ने आम जनता को घेर लिया था। आजादी के बाद उत्पन्न दरिद्रता, भ्रष्टाचार, राजनीतिक अस्थिरता, अनुशासनहीनता, नेताओं की चरित्रहिनता, बाढ, अकाल,आदि का वर्णन धूमिल के काव्य में मिलता है।

मैं सोचता रहा
और घूमता रहा
टूटे हुए पुलों के निचे
वीरान सड़कों पर
आँखों के अंधे रेगिस्तानों में
फटे हुए पालों की
कटूटी हुई चीजों के ढेर में
मैं खोयी हुई आजादी का अर्थ ढूँढता रहा।

जनता को जूठ–मूठ बताकर मंत्री बनकर राजनेता अपने कर्तव्य को भूल जाता है। संसद में वह अपने स्वार्थ हेतु विपक्ष सक साठ–गाँठ करके जनता का किस प्रकार शोषण किया जाए इस पर विचार करते हैं। आम जनता का यह भ्रम है कि संसद में उनकी समस्याओं पर लंबी बहस होती है। लोगों के इस भ्रम को दूर करते हुए धूमिल ने कहा है, कि
अपने यहाँ संसद तेली की वह घानी है
जिसमें आधा तेल और आधा पानी है

मोचीराम जूते सिलवाने वाला एक साधारण आदमी है। जो धूमिल के विचारों का संवाहक प्रतीत होता है। मोचीराम के काम का सही मूल्य लोगों द्वारा देने न की स्थिति में आक्रोश, कुछ न कर पाने की विवशता को कवि ने यहाँ चित्रित किया है। कवि गरीब और अमीर में कोई अंतर नहीं मानते। इन दोनों के बिच की खाई नापने का प्रयास करते हैं।

बाबूजी सच कहूँ मेरी निगाह में
न कोई छोटा है

न कोई बडा है
मेरे लिए हर आदमी एक जोडी जूता है
जो मेरे सामने मरम्मत के लिए खडा है।

निष्कर्षत: धूमिल की कविताओं में सामान्य जन के लिए गहरी पीडा और दर्द के भाव है। वर्तमान प्रजातांत्रिक व्यवस्था से असंतुष्ट होकर किसी दूसरे प्रजातंत्र की तलाश में थे। उनका साहित्य वस्तुत: समाज के निचले वर्गो की संवेदनाओं, भावनाओं और भाषा की अभिव्यक्ति का साहित्य है। धूमिल का काव्य "स्त्रियों के शारीरिक संसार तक ही सीमित नहीं रहता, बल्कि उस संसार को चरितार्थ करने की, पहचानने और चुनौती देने की कोशिश करता है, रोज आदमी का मरता–खपता और कभी–कभार मुट्ठी तानता संसार है।" धूमिल ने आजादी पर व्यंग्य किया है। उनकी कविता केंद्र आम आदमी है। उसकी समस्याओं को चित्रित करना उनका प्रधान उद्देश्य है। जन साधारण को शोषणमुक्त करने के लिए नवयुवकों का सहाय लेना चाहते है। धूमिल का पूरा जीवन आर्थिक अभाओं में बिता। एक साधारण किसान परिवार के होने के कारण उन्होंने न केवल गरीबी को ही देखा नहीं तो गरीबी को भोगा भी है। और साहित्य में भी उतारा है। सामान्य जन के प्रति उनके मन में पूरी सहानुभूति रही है।

संदर्भ ग्रंथ:

१. संसद से सडक तक, धूमिल
२. कल सुनना मुझे, धूमिल
३. सुदामा पांडेय का प्रजातंत्र, धूमिल
४. तलाश के दो मुहावरे, फिलहाल– अशोक वाजपेयी
५. http/www.hindikunj.com

❑❑❑

35

हिन्दी उपन्यासों में चित्रित श्रमिक जीवन की धार्मिक परिस्थितियाँ

प्रा. मुकेशकुमार ए. कांजिया
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग,
म्युनिसिपल आर्ट्स एन्ड कॉमर्स कॉलेज,
उपलेटा,(गुजरात)

विश्व का प्रत्येक समाज और उसमें रह रहे लोग किसी–न–किसी धर्म का अनुपालन करते हैं । शायद ही ऐसा कोई समाज होगा जो धर्म की अवधारणा को न मानता हो । मनुष्य जीवन को अनुशासित और श्रृंखलाबद्ध रूप से चलाने के लिए धर्म का स्वरूप सामने आया । ऐसा माना जाता है कि धर्म के पालन के बिना मनुष्य महज पशु है । धर्म जीवन जीने की पद्धति है । यह जीवन जीने की, नैतिक कर्तव्यों और नियमों की वह पद्धति है, जिसके पालन से व्यक्ति लोक और परलोक दोनों में यश और पुण्य लाभ करता है । धर्म वस्तुत: मानव समाज को उन सभी उच्छृंखलता और अतियों से बचाने की संहिता है जो जीवन के विकास क्रम में व्यक्ति के अस्तित्व बोध के साथ ही इतनी महत्त्वपूर्ण हो जाती है कि उनके कारण कभी–कभी समूचा अस्तित्व ही खतरे में पड जाता है । मानवीय विचारों की कोई भी संहिता जब किसी भू–भाग पर अपने गुरूतर उत्तरदायित्व का निर्वाह करने के लिए अग्रसर होती है तो उसे सहज में धर्म की संज्ञा प्राप्त हो जाती है

धर्म और उसकी नीतियों, उसके संस्कार व अंधविश्वास इन सभी का सबसे अधिक प्रभाव उस वर्ग या उन लोगों पर सबसे अधिक पडता है जो आर्थिक और शैक्षिक रूप से पिछडे रहते हैं । इन वर्गों में धर्मांधता और अंधविश्वासों की मान्यता अधिक रहती है । धर्म एक सांस्कृतिक सर्वव्यापकता है जो विवाह, परिवार, जात–पात, गोत्र निषेध, सामाजिक संगठन सभी के